Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 18 vad 06 30 tu] 2018 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

बंद ही नहीं, मर भी रहे हैं हमारे गांव

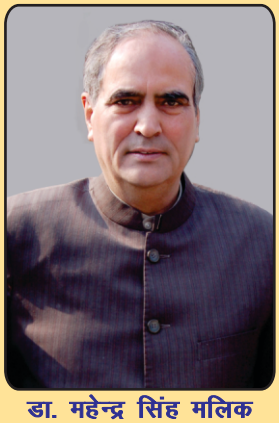

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

ये तो आप जानते ही होंगे कि एक से 10 जून तक गांव बंद थे। मतलब गांव की उत्पादित वस्तु शहर में बिकने के लिए नहीं जाएंगी। हालांकि ऐसा हुआ नहीं फिर भी गांव बंद पर सोशल मीडिया से लेकर मेन स्ट्रीम मीडिया पर बहस ने खूब जोर पकडा। ये आंदोलन किसानों के हक में ना जाकर उनके द्वारा गुस्से व क्षोभ में चंद जगहों पर बिखराई सब्जियों व दूध की वजह से आलोचना का शिकार जरूर बना। रवीना टंडन जैसी अभिनेत्री तक ने किसानों को जेल में डालने की बात कहकर अपनी भडास निकाल ली जिसने कभी खुद खेतों में पांव रखकर नहीं देखा होगा। खैर, बंद क्या असर डालेगा इसके आंकडों पर नजर डाल लेते हैं।

आंकडों के लिहाज से इसे देखें तो देश में 4782 विधायकों पर साल में औसतन 7 अरब पचास करोड रुपये खर्च होते हैं। कुल 790 सांसदों पर सालाना 2 अरब 55 करोड 96 लाख रुपये खर्च होते हैं। राजनीति से निकले तमाम राज्यपालों व उपराज्यपालों पर एक अरब आठ करोड रुपये सालाना खर्च होता है। इस खर्च में प्रधानमंत्री और सभी राज्यों से मुख्यमंत्रियों का खर्च अगर जोड दिया जाए तो ये आंकडा उस स्थिति से मेल नहीं खाएगा जिस बदहाली में देश का किसान जी रहा है। हैरानी की बात तो ये है कि जनता के हारे हुए नुमाइंदों को भी ताउम्र पेंशन देने वाला हमारा देश किसान की स्थिति को लेकर जरा भी चिंतित नहीं है, हां, ट्वीटर पर नेता जरूर किसान हितैषी बनकर दिखाते हैं लेकिन सत्ता हाथ में आते ही सबकुछ भूल जाते हैं। क्षेत्रीय पार्टियां जरूर किसानों के दबाव में रहती हैं लेकिन बडी मछली छोटी को खाती है कि तर्ज पर देश की दोनों बडी पार्टियां मजबूरी में ही केवल इनसे नाता रख रही हैं और हर तरह से प्रयास है कि इन्हें खत्म कर दिया जाए।

देश की 125 करोड से भी ज्यादा आबादी के लिए गेहूं व धान की पैदावार हमें अहम योगदान देने वाले हमारे प्रदेश के किसान भी बुरी हालत में हैं। अगर आंकडों की ही बात करें तो हरियाणा के किसानों पर 31 मार्च, 2017 तक 46041 करोड़ रुपये कृषि कर्ज था, गत 31 मार्च को इस कर्ज में से 4262 करोड़ रुपये की राशि एनपीए (नॉन परफार्मिंग एसेट्स) यानी इतनी राशि अब आने की उम्मीद नहीं है। हरियाणा के 15,01,810 किसानों ने 49,429 करोड़ रुपये का कर्ज ले रखा है। इनमें से 1, 51,696 किसान कर्ज नहीं लौटा पा रहे है। इसके साथ ही बिजली के बिलों की डिफाल्टर पर रिसर्च हो तो सामने आएगा कि किसान अपने बच्चों की फीस, बिजली के बिल जैसे सामान्य खर्चों को भी समय पर चुकता करने की स्थिति में नहीं हैं। किसान की बेटी की शादी हो या घर बनाना हो, हर जगह वह कर्ज के दलदल में धंसता ही जा रहा है। रही सही कसर जमीन का अधिग्रहण कर उसे मजदूर भूख से मरने के लिए मजबूर किया जा रहा है। किसान की आय को दोगुना करने के वादे बहुत सालों से चलते आ रहे हैं लेकिन हकीकत में अभी तक कोई योजना किसान की दशा में रत्ती भर का भी फर्क पैदा नहीं कर पाई है। एक एक करके वो किसानी से खुद को अलग कर रहे हैं और शहरों में छोटे मोटे मजदूरीनुमा कामों से घर का पोषण करने को मजबूर हैं। कर्ज से सब्जबाग में जो किसान फंसे उन्होंने कोठियां जरूर बना ली है लेकिन

'ks"k i`t&2 ij

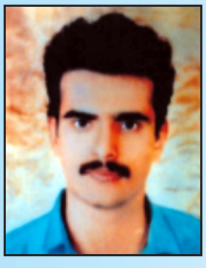

Bhai Surender Singh MALIK Memorial All India Essay Writing Competition on 04-7-2018

Jat Sabha, Chandigarh has been organising 'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition' for the College, University & 10th, 10+1 and 10+2 students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineer, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexander the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young. During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the black clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind Haryana. This prestigious competition carries the prizes for urban and Rural categories. This competition will be held on 04-7-2018.

विस्तृत पृष्ठ 6 पर

शेष पेज–1

हकीकत में जमीन बैंक के रहन पडी है।

अब बात करते हैं गांव बंद आंदोलन की। ये आंदोलन सोशल मीडिया की देन है और उन कमेरे के पुत्रों ने इसका आहवान किया है जो खेती की असली दशा को जानते हैं। सोशल मीडिया से भरी हुंकार ने किसान संगठनों को आगे किया और पूरे देश में एक माहौल बना कि किसान की दशा को सरकार तक पहुंचाने के लिए इस आंदोलन को सफल बनाया जाए। मरे पडे किसान को इसमें एक उम्मीद की किरण दिखाई दी और ज्यादातर ने अपने उत्पाद शहर में नहीं भेजे लेकिन जो सब्जियों जैसी जरूरत की चीजें कैसी रोकी जा सकती थी और वो भी उस दिशा में जब कर्ज लेकर खेती की गई हो। इसलिए शहरों को वो कमी महसूस नहीं हो पाई जो गांव बंद असलियत में होने पर होनी चाहिए थी। पंजाब और हरियाणा सहित पूरे देशभर में ये आंदोलन अपना आंशिक असर ही दिखा पाया और रही सही कसर एक आध जगह पर सडक पर दूध फेंकने की घटना को आंदोलन की कमर तोडने का भी काम किया।

एक उद्योगपति कोई भी चीज बनाता है तो उसका दाम खुद तय करता है लेकिन देश के किसान का उत्पाद किस भाव पर बिकेगा ये तय करने का अधिकार उसके पास नहीं हैं। किसानों के उत्पादकों की कीमत आढ़तियों द्वारा तय की जाती है और मंडी फीस किसान को अलग से देनी पड़ती है। किसान की अक्समात मृत्यु पर उसका कोई बीमा आदि नहीं होता। ऐसे में उनके बच्चे सड़क पर आ जाते हैं, दिन-रात एक करके देश की सूरत बदलने वाला किसान और उसका परिवार न केवल भूखा सोने को मजबूर होता है बल्कि सदैव के लिए निराश्रित हो जाता है।

किसान काश्तकार वर्ग के उत्थान हेतु उनके द्वारा उत्पादित खादयान फल सब्जियों व दुख आदि की लागत/खर्चे का आलकन करते उत्पादन/उपज का पर्याप्त मूल्य निर्धारण करना आवश्यक है। इसके साथ ही किसान द्वारा उत्पादित फसलों व दूध आदि का निर्यात शुरू करना चाहिए। लेकिन सरकार द्वारा दूख चीनी व गेहु आदि का आयात किया जा रहा है। विडम्बना है कि किसान की उपज व अन्य उत्पादों का निर्यात की वजाय आयात किया जा रहा है। उदाहरणार्थ दूध का निर्यात बन्द करने से सकिम्ड मिल्क पावडर की किमत 240-250 प्रति किलों से घटकर 140-150 रूप्ये प्रति किलों रह गई है। यदि किसान की गेहुं सरसों चीनी धान आदि की फसलों का आयात बन्द कर दिया जाए, तो इससे बनने वाले उत्पादों एवं वस्तुओं की किमत अपने आप बढ़ जाएगी और किसान को इससे अपने उपज का उचित मूल्य मिल सकता है।

हाल ही में राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक 1997 से लेकर पिछले साल के अंत तक यानी तेरह वर्षों में दो लाख सोलह हजार पाँच सौ किसानों ने आत्महत्या की। सरकार 2013 से किसानों की आत्महत्या के आंकड़े जमा कर रही है। इसके मुताबिक हर साल 12 हजार किसान अपनी जिंदगी खत्म कर रहे हैं। कर्ज में डूबे और खेती में हो रहे घाटे को किसान बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। सरकार के अनुसार 2015 में कृषि क्षेत्र से जुड़े कुल 12,602 लोगों ने आत्महत्या की। इनमें 8,007 किसान-उत्पादक थे जबकि 4,595 लोग कृषि संबंधी श्रमिक के तौर पर काम कर रहे थे। 2015 में भारत में कुल 1,33,623 आत्महत्याओं में से अपनी जान लेने वाले 9.4 प्रतिशत किसान थे। 2015 में सबसे ज्यादा 4,291 किसानों ने महाराष्ट्र में आत्महत्या की जबकि 1,569 आत्महत्याओं के साथ कर्नाटक इस मामले में दूसरे स्थान पर है। इसके बाद तेलंगाना (1400), मध्य प्रदेश (1,290), छत्तीसगढ़ (954), आंध्र प्रदेश (916) और तमिलनाडु (606) का स्थान आता है। 2014 में आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या 12,360 और 2013 में 11,772 थी। जबकि यह अवधि देश में ऊँची विकास दर की रही है।

किसानों को ऋण दिए जाने की व्यवस्था और सुविधाओं को मजबूत तथा उदार बनाने की आवश्यकता है। समय-समय पर केंद्र और राज्य सरकारों ने किसानों को ऋणमुक्त कराने के लिए ऋण माफी की अनेक योजनाएं घोषित की हैं जिस पर गभीरतापूर्वक विचार करके निर्णय लिया गया होता तो किसानों की दुर्दशा शायद कम होती। ऋण माफी से निश्चित रूप से उन किसानों को लाभ हुआ है जो कभी अच्छे ऋण भुगतानकर्ता थे ही नहीं और उनमें यह प्रवृति विकसित हुई कि ऋण की अदायगी करने से कोई लाभ नहीं है। किसी न किसी समय जब सरकार माफ करेगी तो इसका लाभ हमको मिलेगा। साथ ही, ऐसे किसान जो सदैव समय से ऋण अदायगी करते रहे हैं, वे इस ऋण माफी से स्वयं को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे इससे धोखा खाए हैं। इसलिए उनमें भी यह आस्था विकसित हो रही है कि समय से कर्ज अदा करने से कोई लाभ नहीं है और जब बकायेदार सदस्यों का कुछ नहीं बिगड़ रहा तो हमारा क्या बिगड़ेगा। किसान किसी न किसी रूप में लगभग सभी वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करके आज बकायेदार हैं और बकायेदारों को ऋण न देने की नीति के कारण वह अब इन वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने में असमर्थ हैं परंतु जब उसे अपने किसी अन्य कार्य, सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों के निवर्हन हेतु किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता होती है तब वह बाध्य होकर उसी साहूकार के पास ऋण प्राप्ति के लिए जाता है जिससे मुक्ति दिलाने के लिए स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री से लेकर अब तक सभी प्रयासरत रहे हैं। दीन बंधु सर छोटूराम का सारा जीवन भी किसान को इसी भंवर से निकालने में चला गया।

अंतिम बात ये है कि आंदोलन के चलते गांव बंद रहे हो या नहीं हो रहे हो और सवाल ये नहीं हैं। बडा सवाल और हकीकत ये है कि गांव बंद ही नहीं मरणासन्न हैं। एक ना एक दिन ये गांव बंद ही नहीं होंगे मर भी जाएंगे और तब देश की इतनी बडी आबादी का पेट भरने के लिए रातों रात किसान कहां से पैदा होंगे?

डा० महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत्त,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

एक ऐसा महाराजा, जिसने कभी अपने नाम से राज हीं किया याद रहें योद्धाः महाराजा रणजीत सिंह

– धर्मेन्द्र कंवारी

महाराजा के रूप में उनका राजतिलक तो हुआ किन्तु वे राज सिंहासन पर कभी नहीं बैठे। अपने दरबारियों के साथ मनसद के सहारे जमीन पर बैठना उन्हें ज्यादा पसंद था। 21 वर्ष की उम्र में ही 'महाराजा' की उपाधि से विभूषित हुए। कालांतर में वे 'शेर ए पंजाब' के नाम से विख्यात हुए। ऐसे महान शासक का नाम तो आपने सुना ही होगा। आइए आज याद करते हैं शेर ए पंजाब महाराजा रणजीत सिंह को। सन 1780 में गुजरांवाला,भारत (अब पाकिस्तान) में सुकरचक्या मिसल (जागीर) के मुखिया जाट महासिंह के घर हुआ। अभी वह 12 वर्ष के थे कि उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। सन 1792 से 1797 तक की जागीर की देखभाल एक प्रतिशासक परिषद् ने की। इस परिषद् में इनकी माता– सास और दीवान लखपतराय शामिल थे। सन 1797 में महाराजा रणजीत सिंह ने अपनी जागीर का समस्त कार्यभार स्वयं संभाल लिया। महाराजा रणजीत सिंह ने सन 1801 में बैसाखी के दिन लाहौर में बाबा साहब बेदी के हाथों माथे पर तिलक लगवाकर अपने आपको एक स्वतंत्र भारतीय शासक के रूप में प्रतिष्ठत किया। 40 वर्ष के अपने शासनकाल में महाराजा रणजीत सिंह ने इस स्वतंत्र राज्य की सीमाओं को और विस्तृत किया। साथ ही साथ उसमे ऐसी शक्ति भरी की किसी भी आक्रमणकारी की इस ओर आने की हिम्मत नहीं हुई। उनपर शोध कर लेख लिखने वाले सुरेंद्र महरा के अनुसार, महाराजा रणजीत सिंह एक अनूठे शासक थे। उन्होंने कभी अपने नाम से शासन नहीं किया। वे सदैव खालसा या पंथ खालसा के नाम से शासन करते रहे। एक कुशल शासक के रूप में रणजीत सिंह अच्छी तरह जानते थे की जब तक उनकी सेना सुशिक्षित नहीं होगी, वह शत्रुओ का मुकाबला नहीं कर सकेगी। उस समय तक ईस्ट इंडिया कम्पनी का अधिकार सम्पूर्ण भारत पर हो चुका था। भारतीय सैन्य पद्दति और अस्त्र . शस्त्र यूरोपीय सैन्य व्यवस्था के सम्मुख नाकारा सिद्ध हो रहे थे। सन 1805 में महाराजा ने भेष बदलकर लार्ड लेक शिविर में जाकर अंग्रेजी सेना की कवायद, गणवेश और सैन्य पद्दति को देखा और अपनी सेना को उसी पद्दति से संगठित करने का निश्चय किया। प्रारम्भ में स्वतन्त्र ढंग से लड़ने वाले सिख सैनिकों को कवायद आदि का ढंग बड़ा हास्यापद लगा और उन्होंने उसका विरोध किया पर महाराजा रणजीत सिंह अपने निर्णय पर अढिग रहे। महान इतिहासकार जे. डी कनिंघम ने कहा था कि निःसंदेह रणजीत सिंह की उपलब्धियाँ महान थी। उसने पंजाब को एक आपसी लड़ने वाले संघ के रूप में प्राप्त किया तथा एक शक्तिशाली राज्य के रूप में परिवर्तित किया। महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में किसी को मृत्युदंड नहीं दिया गया, यह तथ्य अपने आप में कम आश्चर्यजनक नहीं है। उस युग में जब शक्ति के मद में चूर शासकगण बात बात में अपने विरोधियो को मौत के घाट उतार देते थे, रणजीत सिंह ने सदैव अपने विरोधियों के प्रति उदारता और दया का दृष्टिकोण रखा, जिस किसी राज्य या नवाब का राज्य जीत कर उन्होंने अपने राज्य में मिलाया उसे जीवनयापन के लिए कोई न कोई जागीर निश्चित रूप से दे दी। एक व्यक्ति के रूप में महाराजा रणजीत सिंह अपनी उदारता और दयालुता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उनकी इस भावना के कारण उन्हें लाखबख्श कहा जाता था। शारीरिक दृष्टि से रणजीत सिंह उन व्यक्तियों में से नहीं थे, जिन्हें सुदर्शन नायक के रूप में याद किया जाये। उनका कद औसत दर्जे का था। रंग गहरा गेहुँवा था, बचपन में चेचक की बीमारी के कारण उनकी बाई आँख ख़राब हो गयी थी। चेहरे पर चेचक के गहरे दाग थे परन्तु उनका व्यक्तित्व आकर्षक था। तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर ज़नरल लार्ड विलियम बेटिंक ने एक बार फ़क़ीर अजिजमुद्दीन से पूछा की महाराजा की कौन सी आँख ख़राब है। फ़क़ीर साहब ने उत्तर दिया। " उनके चेहरे पर इतना तेज है कि मैंने कभी सीधे उनके चेहरे की ओर देखा ही नहीं। इसलिए मुझे यह नहीं मालूम की उनकी कौन सी आँख ख़राब है। "

उनकी महानता से जुडा एक प्रसंग है।एक मुसलमान कारीगर ने अनेक वर्षो की साधना और श्रम से कुरान शरीफ की एक अत्यंत सुन्दर प्रति सोने और चाँदी से बनी स्याही से तैयार की। उस प्रति को लेकर वह पंजाब और सिंध के अनेक नवाबों के पास गया लेकिन सभी ने उसके कार्य और कला की प्रशंसा की परन्तु कोई भी उस प्रति को खरीदने के लिए तैयार न हुआ। खुशनवीस उस प्रति का जो भी मूल्य मांगता था, वह सभी को अपनी सामर्थ्य से अधिक लगता था। निराश होकर कारीगर को असमर्थ पाया. महाराजा रणजीत सिंह ने भी यह बात सुनी और उसे अपने पास बुलवाया। उसने कुरान शरीफ की वह प्रति महाराज को दिखाई।

महाराजा रणजीत सिंह ने बड़े सम्मान से उसे उठाकर अपने मस्तक में लगाया और वजीर को आज्ञा दी– " खुशनवीस को उतना धन दे दिया जाए, जितना वह चाहता है और कुरान शरीफ की इस प्रति को मेरे संग्रहालय में रख दिया जाए।" महाराज के इस कार्य से सभी को आश्चर्य हुआ। फ़क़ीर अजिजद्दीन ने पूछा– हुजूर, आपने इस प्रति के लिए बहुत बड़ी धनराशि दी है, परन्तु वह तो आपके किसी काम की नहीं है क्योंकि आप सिख है और यह मुसलमानों की धर्मपुस्तक है। महाराज ने उत्तर दिया– फ़क़ीर साहब, ईश्वर की यह इच्छा है की मैं सभी धर्मो को एक नजर से देखूँ। पंजाब के लोक जीवन और लोक कथाओं में महाराजा रणजीत सिंह से सम्बन्धित अनेक कथाएं कही व सुनी जाती है, इसमें से अधिकांश कहानियां उनकी उदारता, न्यायप्रियता और सभी धर्मो के प्रति सम्मान को लेकर प्रचलित है। उन्हें अपने जीवन में प्रजा का भरपूर प्यार मिला। अपने जीवन काल में ही वे अनेक लोक गाथाओं और जनश्रुतियों का केंद्र बन गये थे। महाराजा रणजीत सिंह ने देश की अनेको मस्जिदों की मरम्मत करवाई और मंदिरों को दान दिया। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर (वाराणसी) के कलश को 22 मन सोना देकर उसे स्वर्ण मंडित किया और अमृतसर के हरिमंदिर पर सोना चढ़वाकर उसे स्वर्ण मंदिर में बदल दिया। महाराजा रणजीत सिंह का 27 जून सन 1839 में लाहौर में देहावसान हो गया. उनके शासन के 40 वर्ष निरंतर युद्धों . संघर्षो के साथ ही साथ पंजाब के आर्थिक और सामाजिक विकास के वर्ष थे। महाराजा रणजीत सिंह की कार्यशैली में अनेक ऐसे गुण थे, जिन्हें वर्तमान शासन व्यवस्था में भी आदर्श के रूप में भी सम्मुख रखा जा सकता है। वे शेर–ए पंजाब के नाम से हमेशा प्रसिद्ध रहेंगे। ऐसे महान शासक को हमारा नमन।

सम्मान या अपमान?
भंवर में फंसी होनहारों की पुरस्कार राशि

– मंजू श्योराण

जाट समाज के 11 खिलाडियों ने राष्ट्रमंडल खेलों में जीते पदक, हरियाणा के कुल 22 पदक, किसी को भी नहीं मिला है सरकार से अभी तक सम्मान । अप्रैल महीने में गोल्ड कोस्ट में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में हरियाणा के खिलाड़ियों का दबदबा सभी ने देखा और पूरे देश ने हरियाणा का लोहा माना। इन खेलों में भारत द्वारा जीते गए कुल आठ स्वर्ण पदकों में से छह पदक प्रदेश के खिलाड़ियों ने कब्जाए हैं। हमारे खिलाडियों ने नौ गोल्ड, छह रजत और सात कांस्य समेत 22 पदक जीते, जबकि भारत कुल 25 गोल्ड, 16 रजत और 18 कांस्य जीते। इस बार भारत ने गोल्ड गेस्ट में अपना अब तक सबसे बड़ा 218 खिलाडियों का दल भेजा था इसमें हरियाणा के 37 खिलाड़ी शामिल थे। सफलता को अगर आंकडों और प्रतिशत के नजरिए से देखें तो भारतीय दल में हरियाणा के करीब 17 प्रतिशत खिलाड़ी शामिल थे। गोल्ड कोस्ट में भारत के अब तक 59 पदक हैं। इनमें हरियाणा के खिलाड़ियों के 22 पदक शामिल हैं। यानी शेष भारत के 181 खिलाड़ियों ने 37 पदक जीते और इस तरह 22 प्रतिशत खिलाड़ी पदक जीतने में सफल रहे। हरियाणा के 22 पदकों में 11 पदक अकेले जाट समाज के युवाओं ने जीते हैं जो हरियाणा के कुल पदकों का पचास प्रतिशत है। ये भी समाज के लिए गौरव की बात है लेकिन विवाद इसके बाद खडा होता है। जहां सरकार को इन सभी 22 युवाओं को सिर आंखों पर बैठाकर सम्मानित करना चाहिए था वही यह विवाद अब तक खटाई में पडा हुआ है। विवाद की शुरूआत तब हुई जब हरियाणा के प्रदर्शन को पूरी दुनिया ने देखा। हरियाणा सरकार के खेल मंत्री ने घोषणा कर दी कि राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले प्रदेश के खिलाड़ियों को राज्य सरकार डेढ़ करोड़ रुपये पुरस्कार राशि देगी और फिर कहा, 'राज्य सरकार हर स्वर्ण पदक विजेता को श्रेणी ए, रजत पदक विजेता को श्रेणी बी और कांस्य पदक विजेता को श्रेणी सी वर्ग में नौकरी देगी। इसके बाद सरकार तुरंत ही एक अन्य ऐलान कर दिया कि हरियाणा के उन खिलाडियों को इस पुरस्कार राशि में वो राशि कम करके दी जाएगी जो उन्हें उनके विभाग से मिलेगी।

हरियाणा सरकार की नई खेल नीति में प्रावधान है कि उसी खिलाड़ी को पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी, जो हरियाणा का रहने वाला है तथा उसने खेलों में हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया हो। राज्य में 13 खिलाड़ी ऐसे हैं, जो हरियाणा के रहने वाले हैं, लेकिन उन्होंने हरियाणा की बजाय रेलवे सहित अन्य संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए भारत के लिए पदक जीते। सरकार का कहना है कि नियमों के मुताबिक ये खिलाड़ी पुरस्कार राशि के बिल्कुल भी हकदार नहीं हैं। लेकिन, खेल मंत्री ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल से बातचीत के बाद यह प्रावधान करा दिया था कि इन खिलाड़ियों को एजेंसी से मिलने वाली राशि की कटौती कर हरियाणा द्वारा दी जाने वाली बाकी राशि प्रदान कर दी जाएगी। बस विवाद यही से खड़ा हुआ और खिलाडियों ने इसका विरोध जताया। विनेश फौगाट ने तो इस मामले में प्रधानमंत्री को भी ट्वीट कर हस्तक्षेप की मांग की और इसके बाद अन्य खिलाड़ियों ने भी विरोध दर्ज करवाया। एकाएक इस तरह का विरोध होते देख खेल मंत्री और सरकार दबाव में आ गए और सम्मान समारोह स्थगित कर दिया गया, जिसके बाद से अभी तक नई तिथि का ही निर्धारण नहीं हो पाया है वहीं नीति को लेकर भी सरकार के मंत्री अलग अलग बयान दे रहे हैं। यहां तक खेल मंत्री अनिल विज व मुख्यमंत्री के भी एक दूसरे के विरोधाभासी बयान इसको लेकर आए हैं। अब प्रदेश के खिलाडी जो हरियाणा के ही है वो सम्मान के लिए नई तिथि और नीति दोनों का इंतजार कर रहे हैं।

उपरोक्त के इलावा हरियाणा सरकार खेल विकास से संबंधित नीति व आदेश जारी करते समय दो कदम आगे लेती है और फिर चार कदम पीछे हट जाती है। एक बार नीति बनाती है, फिर उसको बिगाड़ देती है और फिर दोबारा से बनाती है। अत: इससे खेल व खिलाड़ियों का मनोबल लगातार बढ़ने की बजाए कम हो रहा है। उदाहरण के तौर पर पिछले सप्ताह हरियाणा सरकार ने एक व्यापारिक संस्था की तर्ज पर आदेश जारी किए यानि कि खिलाड़ियों को अपनी आमदनी का 33 प्रतिशत खेल विभाग में वापिस जमा करना होगा। हालांकि ये आदेश दो दिन बाद सरकार ने वापिस ले लिए लेकिन इस प्रकार के आदेश सरकार के तुगलकी फरमान व तुच्छ मानसिकता को दर्शाते हैं जो कि किसी भी प्रकार से खेल व खिलाड़ियों के हित में नहीं है।

यह बात अलग है कि सरकार चाहे सम्मान दे या ना दे, हरियाणा में खेलों का भविष्य उज्जवल है। राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वाले हरियाणा के 22 खिलाड़ियों से सबसे कम उम्र के खिलाड़ी अनीश भनवाला रहे वही सबसे बड़ी उम्र के खिलाड़ी संजीव भी 37 ही साल के हैं।आंकड़ों के हिसाब से इन पदकवीरों की उम्र को देखा जाए तो वह औसत 24 साल बनती है। यानी राष्ट्रमंडल खेलों में युवा हरियाणा की ताकत दुनिया ने देखी है। उम्र के जिस पायदान पर ये खिलाड़ी अभी फिलहाल हैं उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि अगले 10 साल खेलों में हरियाणा का यह स्वर्णिम प्रदर्शन इसी तरह जारी रहने की पूरी उम्मीद है।?

जाट प्रतिभा: चूना राम धतरवाल
बाड़मेर का चूनाराम बनेगा इसरो मे वैज्ञानिक

– के.पी. सिंह

बाड़मेर जिले के खट्टू नरेवा गांव के एक झोपडनूमा घर के बाहर कुछ पत्रकार खडे थे। पैरों में चमडे की जूती पहने एक ग्रामीण भोलाराम जाट को समझ नहीं आ रहा था कि आज सभी उसके बेटे चूनाराम धतरवाल के बारे में क्यों पूछ रहे हैं। भोलाराम को बताया गया कि अब उसका बेटा इसरो में वैज्ञानिक बनेगा तब भी भोलाराम को कुछ समझ नहीं आया। बडी मायूमियमत से इतना जरूर कहा कि म्होरो चूनो मेहनती तो घणो सारो है। यानी चूराराम मेहनत तो बहुत करता है। सरहद के बिल्कुल सटे बाडमेर के खट्टू नरेवा गांव के निवासी भोलाराम जाट बहुत छोटे से जमींदार हैं। जुएनुमा खेती ने उनकी जिंदगी को भी बेहद कठिन बना दिया है इसलिए वह खुद

भी कुछ खास नहीं पढ़ सके। आठवीं के बाद हल संभाल लिया। दो बच्चे हुए और छोटे चूनाराम बचपन से ही पढाई में दूसरे बच्चों से अलग निकला। पिता के घर बिजली नहीं होने के चलते दीए की रोशनी में ही पढाई करने वाले चूनाराम की मुसीबतें कम नहीं थी। गांव से चार किलोमीटर दूर स्कूल में चूनाराम पैदल चलकर जाता था। बेटे की पढाई की जरूरतें पूरी करने के लिए भोलाराम ने मजदूरी भी की। छोटे भाई की पढाई में लग्न देखकर बडे भाई किशन ने भी नौकरी शुरू कर दी। आठवीं के बाद चूनाराम का चयन नवोदय विद्यालय में हुआ। 2012 में उसने 12वीं में गोल्ड मैडल हासिल किया। 2017 में उसका चयन एनआईआईटी सूरत में हुआ लेकिन वह वैज्ञानिक बनना चाहता था। केंद्रीय रिक्रूटमेंट बोर्ड ने 35 वैज्ञानिकों के लिए पदों का आवेदन निकाला तो चूनाराम ने वहां फार्म भरा और ऑल इंडिया रैंक में 12वें स्थान पर रहा। इस परीक्षा में दूसरा स्थान भी जाट समाज के होनहार कंवलजीत संधु को मिला।

पिता भोलाराम धतरवाल बताते हैं कि मैं सालभर में मुश्किल से एक जोडी कपडे ही बच्चे को दिला पाता था लेकिन उसकी पढाई लिखाई में कसर नहीं छोडी। गांव में बिजली नहीं है लेकिन दीए की रोशनी में चूनाराम ने मेहनत करने में कसर नहीं छोडी। अब वह देश के लिए नाम रोशन करेगा तो मेहनत सफल हो गई है।

जाट समाज के असली हीरो

हॉकी खिलाड़ी अजीत नांदल की है, 21 बेटियां

– बी.एस. गिल

महंगाई का जमाना और 21 बेटियां। आपको सुनकर हैरानी होगी लेकिन रोहतक के सेक्टर एक निवासी पूर्व हॉकी खिलाडी अजीत नांदल की 21 बेटियां तो हैं और सभी की सभी खेलों के लिए नांदल ने गोद ली हैं। बोहर गांव को पिछले साल रोहतक पुलिस ने गोद लिया था तब अजीत नांदल ने भी गांव की 21 बेटियों को गोद लेकर उनके स्पोर्ट्स व शिक्षा की समस्त जिम्मेदारी ली थी। अब एक साल के प्रशिक्षण के बाद बेटियों के आत्मविश्वास में बढोतरी हुई है वहीं होर्स राइडिंग में काफी अच्छा कर रही है। 21 बेटियां किसान परिवारों की है और उनमें दिव्यांग बेटियां भी शामिल हैं। दो साल के प्रशिक्षण के बाद वे किसी पेशेवर होर्स राइडिंग प्रतियोगिता में भी भाग लेने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाएंगी। इसके साथ ही उनकी पढाई का सारा खर्च भी अजीत नांदल ही उठा रहे हैं।

इन बेटियों को गोद लेने वाले रोहतक के सेक्टर एक निवासी अजीत नांदल ने बताया कि अंतराष्ट्रीय क्रिकेट खिलाड़ी गौतम गंभीर ने भी हाल ही में लड़कियों को गोद लिया था और उन्हीं से प्रेरणा लेते हुए आज यहां सरकारी स्कूल की छात्राओं को गोद लिया है। देश में खिलाड़ी द्वारा लड़कियां को गोद लेने का यह दूसरा उदारहण है लेकिन इससे उन्हें गजब की संतुष्टि मिल रही है। गोद ली हुई 21 लड़कियों को खेलों की ट्रेनिंग देने, सामान उपलब्ध करवाना तथा खेलों में भाग लेना सभी उसकी जिम्मेवारी अब अजीत नांदल संभाल रहे हैं। छात्राओं को अंतराष्ट्रीय स्तर की ट्रैनिंग दी दी जा रही है इसके साथ ही अगर गांव की कोई अन्य बेटी भी खेलों से जुडना चाहती है तो उसका भी स्वागत है। अजीत नांदल के अनुसार 'दी जिम' के नाम से 76 स्थानों में जिम हैं। छात्राएं उनके जिमों मे भी व्यायाम आदि कर सकती है।

अजीत नांदल भारतीय हॉकी टीम के सदस्य रहे हैं और हॉकी छोड़ने के बाद घोड़े पालने का काम कर रहे हैं। इनके पिता किसान, माता व पत्नी गृहिणी है। इनके दो बच्चे हैं। रोहट में टीम के साथ घूमने गए अजीत ने लोगों, पर्यटकों में घोड़ों, घुड़सवारी के प्रति आकर्षण देखा तो उनका भी घोड़ों के प्रति आकर्षण व शौक जागा और उन्होंने भी घोड़े पालने का निर्णय किया। आज उनके पास 10 घोड़े हैं। वे रोज सुबह और शाम अपने घोड़ों के साथ समय बिताते है। उनके घोड़ों में सबसे ज्यादा मारवाड़ी और सिंधी घोड़ों की ब्रीड शामिल है। अपने घोड़ों को वह हर साल होने वाली हार्स चैंपियनशिप में भी लेकर जाते है। उनका सबसे ज्यादा लगाव 2007 में खरीदी हुई पहली घोड़ी रूबी के साथ है जो उनके पास करीब 10 साल से है। उनका घोड़ा शिवराज 7 बार नेशनल हॉर्स चैंपियनशिप जीत चुका है। घोड़ों की देखभाल के लिए स्पेशल ट्रेनर्स और ग्रूम रखे हुए है, लेकिन उनकी डाइट खुद अजीत प्लान करते है। उनकी फिटनेस के लिए स्पेशल एक्सरसाइज और मसाज भी की जाती है। नांदल ने वर्ष 2007 में घोड़े पालना शुरू किया। अजीत के पास मारवाड़ी घोड़े की विभिन्न नस्लों में एक 'फूलमाल' नस्ल का घोड़ा शिवराज है, जो पूरे देश में केवल एक ही है। नांदल ने चौथी कक्षा से हॉकी खेलना शुरू किया। अपने 25 साल के खेल जीवन में वर्ष 2000 से 2007 तक भारतीय टीम के हिस्सा रहे। वर्ष 2007 से 2009 तक इंडियन एयरलाइन्स के लिए खेलने लगे। बाद में हॉकी छोड़ दी और वर्ष 2013 में वर्ल्ड हॉकी सीरिज में वापस टीम में शामिल हुए, जिसमें टीम को सिल्वर मैडल मिला। नांदल राष्ट्रीय टीम बी के कप्तान रहे। ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी टीम के 2 बार कप्तान रहे। वर्तमान में लाइमलाइट से दूर वे अपनी गांव की टीम के लिए खेलते हैं। इसके अलावा वे रोहतक में ही एक जिम का संचालन कर रहे है, जो देश के सर्वश्रेष्ठ जिम में शामिल है।

किसानों के मसीहा-सर छोटूराम

– विद्यालंकार

नरेन्द्र मोदी जी किसान की चिंता तो बहुत करते हैं लेकिन अभी तक किया कुछ नहीं। सर छोटूराम किसान के लिए जीते थे और किसान के लिए मरते थे। किसान सभी जातियों के हैं। किसानों के साथ मजदूर भी जुड़े हैं। यही वजह है कि जितनी मोहब्बत हरियाणा पंजाब के लोग छोटूराम जी से करते हैं पाकिस्तान और बग्लादेश के किसान भी उतनी ही मोहब्बत करते हैं। सर छोटूराम जी ने किसानोंके लिए न जाने कितने काम किए लेकिन तीन काम उल्लेखनीय हैं। पहला अंग्रेजों से लड़कर ढंके की चोट पर फसलों के भाव लेना। भाखड़ा बांध की योजना। और किसानों कोसाहूकारों के चंगुल से निकालना। जब किसी ने कल्पना भी नहीं की थी सर छोटूराम ने ये

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर अमल करती है। –विनोबा भावे

तीन बड़े काम किए थे। आज है कोई नेता जो साहूकारों के कर्ज से आजाद करवा दे। बस श्रेय लेने की जरूर होड़ लगी है। यह सब बातें मैं इस लिए लिख रहा हूं क्योंकि प्रधानमंत्री जी सर छोटूराम जी की जन्म स्थली सांपला गढ़ी में आ रहे हैं।चुनाव जो सिर पर हैं। मोदी जी सांपला से कुछ ही दूरी पर दिल्ली में चार साल तक बैठे रहे छोटुराम जी की याद भी नही आई। सर छोटूराम जी का आज के दिन कोई मतवाला है। वह उनके नाति केन्द्रीय मंत्री चौधरी विरेन्द्र सिंह है। उनका यह नैतिक कर्तव्य बनता है सर छोटूराम जी की तरज पर किसान – कामगार के हितों के लिए सघंर्ष करे। प्रोफेसर हरि सिहं भी छोटूराम जी के परम भक्त थे। मोदी जी आप छोटूराम यानि छोटे राम। (श्रीराम जी बड़े राम थे।) जी को सचमुच में याद करने सांपला आ रहे हैं तो मौका है आयोग की रिपोर्ट लागू करने का ।चार साल से किसान आयोग की रिपोर्ट की बाट जोह रहा है।यह श्रेय भी ले लो किसान वोटों की झोली भर देगा वरना किसानों को बाहर का रास्ता भी दिखाना आया है।सांपला में आपका जो एक्शन होगा हरियाणा भाजपा की दिशा और दशा तय होगी। आयोग की रिपोर्ट लागू करने का ऐलान ही छोटूराम जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पेज–1 का शेष

"Bhai Surinder Singh Malik Memorial On The Sport All India Essay Writing Competition" For College/University Students & School Students of Class X, XI & XII on 04th July, 2018.

Jat Sabha, Chandigarh organizes **Bhai Surinder Singh Malik Memorial on the Spot All India Essay Writing Competition** for College/University and school students of classes X, XI & XII every year. This year Competition will be held on 04.07.2018 at the following Centres from 10 to 11 A.M. in two categories i.e. Urban and Rural areas.

S. No	Name & Address of Centre	Name of Controller of Examination.
1.	Moti Ram Arya Senior Secondary Sector 27-A, Chandigarh.	Mrs. Saroj Savant, Principal
2.	Ch. Bharat Singh Memorial Sports School Nidani, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Dalip Singh Malik, Director
3.	Bhai Surender Singh Malik Memorial Girls SR. Sec. School, Nidani (Jind)	Mrs. Rajwanti Malik, Principal
4.	Government Girls Sr. Secondary School, Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana)	Mrs. Lata Saini, Principal
5.	Government Senior Secondary School Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Sunil Kumar, Principal
6.	Govt. Girls Senior Secondary School Lajwana-kalan, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Satish Chug, Principal
7.	Shiv Senior Secondary School Gatoli, Distt. Jind (Haryana)	Sh. J. S. Kalonia, Director
8.	Government Girls Sr. Sec. School Julana, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Geeta Ram Sharma, Principal
9.	Government Senior Secondary School Julana, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Rakesh Kapoor, Principal
10.	Kanya Gurukul Sadi Pur Julana, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Ved Pal Lather, Secretary
11.	M.R.C.R. Public School, Julana, Distt. Jind (Haryana)	Mrs. Kiran Bala, Principal
12.	R.P.S. Public School, Julana, Distt. Jind (Haryana)	Mrs. Salil Mehta, Principal
13.	Government Senior Secondary School Kilazaffargarh, Distt. Jind (Haryana)	Sh. Pawan Bhola, Principal
14.	C. L. DAV Senior Secondary School Sector 11, Panchkula.	Mrs. Anjali Marriya, Principal
15.	Gyandeep Model High School Sector 18, Panchkula.	Mrs. Suman Deswal, Principal
16.	Bhawan Vidyalaya, Sector 15, Panchkula.	Mrs. Shahsi Bala Banerjee, Principal

The Competition offers an opportunity to the young students to participate in the national building through their rich thoughts and noble deeds. This prestigious competition offers the following prizes for Urban as well as Rural areas:-

First Prize - Gold Medal & cash Rs. 5100/-, **Second Prize** - Silver Medal & cash Rs. 3100/-, **Third Prize** - Bromoze Medal & Cash Rs. 2100/-, **Conculation Prize** - First + cash Rs. 1500/-, Second - Rs. 1000, Third - Rs. 900 & Other 6 Prize Rs. 600 Each.

(भूमिका/पुस्तक–समीक्षा)

गण-गोत्रा व्यवस्था पर पुर्नविचार आवश्यक है।

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

क) गणों से गोत्रों की उत्पत्तिः

मानव समाज ने जब से परिवार-व्यवस्था का विकास किया है, उसका सामाजिक और आर्थिक विकास निरन्तर होता रहा है। क्योंकि व्यक्ति, परिवार में ही उत्पन्न होता है, और उसी में उसका लालन-पालन भी होता है। परिवार को ही संस्कृत में कुल अथवा कुटुम्ब कहते हैं। उसका बडा रूप ही गण अथवा गोत्र था। इसी प्रकार से गण या गोत्र का भी विस्तृत रूप वंश या कबीला था। अतएव मानव सभ्यता के विकास-क्रम में व्यक्ति से परिवार, परिवार से गण या गोत्र और फिर कबीले और वंश से लेकर बाद में पूर्व मध्यकाल में ही कहीं आकर व्यवसायों के आधार पर जातियों का विकास हुआ है। गुप्तकाल (तीसरी से पाँचवी शताब्दी) से पहले हमें किसी भी जाति का कोई उल्लेख संस्कृत साहित्य अथवा भारतीय इतिहास में नहीं मिलता है। हाँ, कबीलों अथवा कुलों किवां गणों के व्यवसायों में पैतृक परम्परा से बंध जाने पर ही मध्य पूर्व काल में जाति-व्यवस्था का विकास हुआ है। अतएव उससे पूर्व के महापुरुष सबके साँझे ही हैं। अतएव जाट गोत्रावली ग्रन्थ लिखकर श्री महिपाल आर्य ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

अस्तु, यह कहना यहाँ पर असंगत नहीं होगा कि जातियों के वर्तमान संगठनों से पूर्व हमें गण और गोत्रों अथवा कबीलों या जनों का ही परिचय भारतीय इतिहास में मिलता है। वैदिक-काल में भी कुरु, पुरु, तुर्वसु और कृवि तथा सृंजय एवं मत्स्य जैसे अपि आर्य अभिजन थे तो उनके ही समानान्तर यदु, अनु, द्रह्यु, पुरु और तुर्बसु जैसे पाँचजन्य भी थे। तो दस-राजन्य युद्ध में आर्य-शासक। देवोदास के विरुद् जल-युद्ध में पक्थ (पठान) भलानस (भल्ला या बल) और विषाणी (भ्याणादि) अनार्य कबीले भी थे। जैसे-जैसे कृषि-व्यवस्था के विकास के साथ आर्यों ने भारतवर्ष के पश्चिमोत्तरी सीमान्तों से लेकर दक्षिण-पूर्व की ओर बसना आरंभ किया है तो उन्होंने गणों की ही राजनीतिक संस्था जनपद अथवा जाणराज्यों का विकास किया था। जैसेकि कुरूओं ने वर्तमान हरयाणा के थानेश्वर (कुरुक्षेत्र) से लेकर हस्तिनापुर तक अपने राज्य-क्षेत्र का विस्तार किया था।

इसी प्रकार से आर्यों के विदेह कबीले ने सदानीरा अथवा गंडक नदी-तट (वर्तमान गौंडा-बहराईच) से चलकर बिहार में उत्तरी बिहार में मिथिलाचंल अथवा विदेह जनपद बसाया था। तो पांचाल जनपद ने पांचाल जनपद का विकास का विकास किया था, जिसके दो भाग थे- एक उत्तर पांचाल; जिसका राज्यकेन्द्र अहिच्छत्रा अथवा आँवला और बरेली थे। तो दक्षिणी पांचाल की राजधानी काम्पिल्य अथवा वर्तमान कन्नौज था। मत्स्य जनपद की स्थिति भरतपुर-धौलपुर-करौली से लेकर वर्तमान जयपुर जिले तक थी। इसी प्रकार से वैदिक जरितों अथवा पाणिनि कालीन त्रिगर्तों की स्थिति कुल्लू-कांगडा घाटी में थी। जिनकी संख्या बाद में तीन से होकर बाद में छः तक हो गयी थी। इसीलिए पाणिनिमुनि ने 'षष्टिगर्तास्युः' जैसा सूत्रांश लिखा है। डॉ० महेश्वरी प्रसाद(बनारस विश्वविद्यालय) ने इन्हीं त्रिगर्तों से उत्तर पश्चिमी भारत की सर्वाधिक सशक्त और संगठित एवं संघर्षशील जाट जाति की उत्पत्ति स्वीकार की है। वैदिक जरित झ गर्त से ही जर्त या जट्ट झ जाट संभव है।

इस प्रकार से गणों के संघात अथवा संयोग से ही गण-संघों का संगठन साम्राज्य-काल से पूर्व में हुआ था। जैसेकि सिकन्दर के आक्रमण का सबल साम्मुख मालव गण तथा क्षुद्रकों (खोखरों) ने ही मिलकर किया था। इसी प्रकार से कठ और शिवि भी संगठित थे। इसी प्रकार से योधेय और अग्रवाल) लोग भी संगठित थे। अग्रवालों के 17 उपकबीलों अथवा गणों में से ही वर्तमान की अग्रवाल जाति का उद्भव हुआ है। जिनको पौराणिक प्रभाव से महाराजा अग्रसेन के 17 पुत्र ही स्वीकार कर लिया गया है। 12वीं शताब्दी मोहम्मद गौरी ने अग्रोहा को उजाड दिया था। तभी से ये अग्रकुल सारे ही भारतवर्ष में बनिया-व्यापारी बनकर बिखरे हुए हैं।

इसी प्रकार से कठ से कटारिया, शिवि से सोहू और शिरवी तथा तेवतिया जैसे वर्तमान गोत्रों का विकास हुआ है। इसी प्रकार से तुर्वसु कबीले अथवा वंश से ही वर्तमान के ड़ागर और सहरावत जैसे गोत्रों का उद्भव हुआ है। तो अकेले चौहान वंश में से ही कुंडू और वत्स तथा वशिष्ठ जैसे गुरू-गोत्रों का विकास हुआ है। ऐसे गोत्र प्रायः ही वे हैं; जिनको ब्राम्हण -पुरोहितों ने अपना गुरू-गोत्र अथवा कुलनाम अपने यजमान होने के कारण इन्हें अपने स्थायी ग्राहक बनाये रखने के लिए ही दिये थे। लेकिन कूँडू यदि अफगानिस्तान का एक प्रान्त है तो वत्स भी इलाहाबाद के निकट एक जनपद ही था। अतएव स्थानों का भी रूपान्तरण व्यक्तिवाचक गोत्रों के रूप में हुआ है। इसी प्रकार से संभवतः मोहन जो (गो) दारों से बिगड़कर ही ब्रज के जाटों का गोधरे जैसा कुलनाम पड़ा होगा।

(ख) वाचक कुलनाम कैसे बने हैं?

इस प्रकार से गोत्रों को एक आधार स्थान-वाचक भी है जैसेकि मथुरा के निवासी माथुर तो मालवा निवासी मालवीय कहे जाते हैं। इसी प्रकार से विराट नगर (अलवर) के निवासी जाट और वैश्य, वैराटी से राठी ही कहलाते हैं। सीकर से निसृतित वैश्य यदि खण्डेलवाल हैं तो जाट लोग खण्ड़ेला ही कहे जाते हैं। इसी प्रकार से मेवाड से निकले हुए कभी के शिविजन ही वर्तमान में मेड (अजमेर) और मेव कहलाते हैं। इसी प्रकार से ईरान के तेहरान से आगत जाट तेहलान कहलाते हैं तो पारसी जाट फरसवाल हैं। पंजाब के जाटों के तो अधिकांश गोत्र स्थान वाची ही है। यथा, कैरों, प्रतापसिंह जबकि मूल गोत्र उनका ढिल्लों ही था। इसी प्रकार से प्रकाशसिंह बादल, गाँव वाचक गोत्र है जबकि मूल गोत्र उनका भी ढिल्लों हैं और दोनों ही राजकुलों में परस्पर में शादी-विवाह भी हो रहे हैं। समरथ को न दोष गुंसाई वाली बात है। इसी प्रकार से चन्दूमाजरा और टोहका तथा तलवंडी जैसे गाँव-गोत्र हैं। दयालसिंह मजीठिया और सुन्दरसिंह मजीठिया भी ग्राम-गोत्र ही है। मूलगोत्र सिंधु या सिंधावलियां ही है।

आजकल तो पंजाब के सिख जाटों की देखा-देखी हरयाणवी जाटों में भी यह प्रचलन बढ रहा है। जैसेकि श्री ओमप्रकाश चौटाला श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला। इसी प्रकार से भानवाला से बिगडकर बनवाला गोत्र भी है तो पंजाब में इसी से मिलता-जुलता बरनाला ग्राम-गोत्र है। अमृतसर के धारेवाल नामक कस्बे से निसृतित जाट

धारीवाल कहलाते हैं जैसेकि अग्रोहा से निस्तृत जाट ग्रेवाल कहे जाते हैं। इसी प्रकार से बन्नूवाल (कोहाट) से निसृत गोत्र बैनीवाल है इसको कुछ लोग सीरिया के शासक असुर बनियाल का भी अपभ्रंश मानते हैं। कोहाट से निसृत गोत्र जाटों में कुहाड ही कहलाता है। उसी से मिलता-जुलता एक और गोत्र कुलडिया है। राजस्थान के पढ़े-लिखे जाट ब्राह्मणी प्रभाव से बजाय कुल्हाडिया के स्वयं को अब कुलहरि लिखने लगे हैं। जैसाकि खुटैला स्वयं को अब कुन्तल लिखने लगे हैं। तो दहिया कही-कहीं दाधिच्य भी स्वयं को लिखने लगे हैं। कल को तो मेरे अपने कूडँ गोत्र के लोग भी संस्कृतिकरण के प्रभाव से कौन्डिन्य स्वयं को लिखने लग सकते हैं। धारोवाल और नारोवाल पाकिस्तानी पंजाब में भी स्थान हैं। साहीवाल से सींहवाल अब शैवाल बन गये हैं।

श्री महिपाल आर्य शास्त्री जी ने गण-गोत्रों पर कार्य करके एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उपयोगी कार्य किया है। उन्होंने भी अलग-अलग गोत्रों की उत्पत्ति पुरातन वंशों से ही दर्शाई है। लेकिन उनकी समस्या ये है कि वे सारे ही जाट गोत्रों का मूलोत्स आर्य-अभिजनों या फिर रामायण और महाभारत जैसे कल्पित महाकाव्यों में वंशों ही तलाश करते हैं। जबकि जातियों में जो गोत्र या वंश वर्तमान में मौजूद हैं, उनमें अनार्य और आर्यपूर्व के वंशों के अंश भी विद्यमान है। जैसेकि तक्षक से बिगडकर टोकस बनने वाला गोत्र तो स्पष्ट ही अनार्य नाग-वंशज है जोकि महाभारत में आर्य कुरू वंश के जनमेजय का वंश-विनाशक अथवा शत्रु ही बताया गया है। इसी प्रकार से महाभारत में आभीरों किवां अहीरों को भी अनार्य ही लिखा गया है। वहाँ पर ऐसा उल्लेख है कि अनार्य और म्लेच्छ आभीर गणों के स्पर्श से दूषित होकर ही सरस्वती सरिता विलुप्त हो गयी थी। वे संभवतः (अ)सीरिया के निवासी भी हो सकते हैं।

यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान घग्घर या हकरा नदी को ही वैदिक आर्यों ने भारतवर्ष में आकर वैदिक सरस्वती अथवा भारती जैसा नाम दिया था। वरना उससे पूर्व उसकी वास्तविक भौगोलिक अवस्थिति अफगानिस्तान के दक्षिणी प्रान्त हेलमण्ड में ही थी। अतएव उसका नाम भी तब स्थानिक यही था। ऐसा निष्कर्ष डॉ० रामशरण शर्मा का है तो डॉ० हरिदत्त वेदालंकार वहीं की वर्तमान अरगन्दाव नदी को ही वैदिक सरस्वती मानते हैं। भरतगण अथवा वर्तमान फरगना के निकट होने के के ही कारण उसका एक नाम भारती रहा होगा। आर्यों के भरत कबीले ने ही उसको यह नाम दिया होगा।

जो भी हो, लेकिन पश्चिमोत्तर भारतीय सीमान्तों से ही आर्यों का आगमन इधर सिद्ध हो रहा है। क्योंकि वैदिक वैयाकरण यास्काचार्य अफगान ही थे तो स्वयं अष्टाध्यायीकार पाणिनि गान्धार प्रदेश अथवा पेशावर के शालापुर गाँव के पठान थे। तो चाणक्य का सूर्य-कोटल गाँव भी उधर ही है, जिसके आधार पर उनको कौटिल्य कहा गया। इसी प्रकार से बौद्ध विद्वान वसुबंधु, असंग और दिङ्नाग बंधुत्रय भी पठान ही थे। जाटों के भी गाँन्धरो (मथुरा) जैसे गोत्र उधर से ही हमें आगत प्रतीत होते हैं। कठ से बिगडकर कटारिया और गठवाला(मलिक) जैसे गोत्र भी पश्चिमोत्तर से ही इधर आये हैं तो शिविगण से बिगडकर सोहू, शूरा और श्योराण जैसे गोत्र बिलोच हैं।

(ग) संस्कृतिकरण की प्रक्रियाः

पुरातन गणों से जिन वर्तमान गोत्रों की उत्पत्ति हुई है, उनमें बजाय संस्कृतिकरण के लौकिकीकरण की प्रवृत्ति ही प्रबलता के साथ प्रभावी है। यथा, शिवि ने सोहू बन गया है या फिर राजस्थान में शिरवी एक जाति ही बन गई है। बल्कि ब्रज के जाटों का एक मुख्य गोत्र तेवतिया स्वयं शिवि वंश की ही तेवत नामक ग्राम से निसृत शाखा है। इसी प्रकार से मालव वंश के मालवपुत्राः (संस्कृत) से ही वर्तमान का मल्होत्रा अथवा मल्हान जैसा वंश बना है। पंजाब के मालवा के जाट तो स्वयं को मल्ली या माली ही लिखते हैं जोकि एक स्वतंत्र सैनी जैसी माली का भी नाम है तो मराठाओं में भी मल्ली एक उपकुल है। मालवीय ब्राह्मण गोत्र भी मालव ही है।

संस्कृत के दाण्डक वर्तमान में ढांडा है तो सौभूति ही सिहोता और सिमोता है। कुछ विद्वान इन्हें भी सावित्रि पुत्रकाः संस्कृत का ही विकार मानते हैं। जैसाकि पंजाबी में केदार के पौत्रों को ही केहर पोत्रे से बिगड़कर बाद में क्वातरे जैसा रूप बन गया है। इसी प्रकार से चापोत्मकट जैसे प्राचीन वंश से ही गुजरात के राजपूतों में चावडा हैं तो पंजाब के खत्रियों में वही चौपडा है। अतएव प्राचीन गणवाची कुल नामों में हम संस्कृतिकरण और लौकिकी करण की प्रवृति को अवश्यमेव देखना चाहिए। जैसेकि पाणिनि की अष्टाध्यायी में एक ग्लुकायन गण का भी नाम आता है। वर्तमान में हम जाटों में उसे गुलिया और गाल्याण के रूप में ही देखते हैं। लेकिन खत्री-पंजाबी उसे ही खुंगराईन मानते हैं जिनमें उनके भसीन, बहल और कपूर जेसे आठ प्रमुख योद्धा गण (गोत्र) आते हैं जोकि खुंगरायण(ग्लुकायन) को खोखरों का ही संगठन मानते हैं। यहाँ पर शास्त्री जी का बल थोडा संस्कृतिकरण पर अधिक रहा है।

संस्कृत नामों से बिगडकर कितने ही कुलनाम वर्तमान में वन गये हैं जैसेकि अश्वक से अश्मक झ से असिहाग झ सिहाग या सुहाग और अंग्रेजी में सह्वाग तक हो गया था। यह वंश प्रथम भारत वर्षीय सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का था। जोकि उत्तरपश्चिमी भारत में ही विद्यमान था पेशावर और रावलपिंडी (पाकिस्तान) के पास। वहीं पर कोहमोर नामक एक पर्वतीय स्थान से निसृत होने के कारण ये अश्मक झ अश्वग, अहिसाग जैसे गोत्र कोहेमोर से मौर्य कहलाये थे। जाटों में ही आज पर्यन्त मोर जैसा कुलनाम हरयाणा में मिलता है। अतएव मोर और अषियागों का संघटन या गणसंघ ही मौर्य कहलाता था संस्कृत में। जिस मुरा नामक नाईन दासी का पुत्र बनाने की कल्पना ब्राह्मण शास्त्रकारों ने चन्द्रगुप्त को की है, उसका पुत्र होने पर तो वह मोरेय ही कहला सकता था। फिर माँ के नाम पर व्यक्तिवाचक नाम तो संभव है, वंशवाचक कुलनाम नहीं मिलते। यदि दुर्जनतोष न्याय से हम यह भी मान लें कि उसकी माता नापित या नाईन रही भी हो तो भी वंश का वर्धन तो पिता के ही नाम से होता है। नापित या ज्ञाप्ति से भी ज्ञाति जाट झ जाट ही बनता है।

(घ) लौकीकीकरण की प्रक्रियाः

जैसेकि श्री शास्त्री जी ने अपने इस ग्रन्थ में नेहराओं की वैदिक शासक नरिष्यन्त की ही सन्तान माना है। तब वे नारा और नरवाल जैसे गोत्रों के विषय में क्या कहेंगें। बहुत से गोत्र स्थानवाची भी हैं। जैसेकि पश्चिमी पंजाब और सिन्ध के नरोवाल नामक स्थान से निस्तृत लोग ही वर्तमान में नारा और नरवाल हैं। इसी प्रकार से देशवाल नाम स्थान राजस्थान के नागौर जिले के देशवाल नामक स्थान से निर्गत हो सकता है। यह गोत्र अहीरों में भी डागर और लाम्बा की भाँति मिलता है। डागर गोत्र भी हमें स्थानवाची ही प्रतीत होता है। पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में यदू की डूंग (पहाडी) नामक स्थान से ही उनका प्रवास प्रतीत होता है। यदि इसी दृष्टि से देखें तो लाम्बा गोत्र की अवस्थिति तो

हमें इटली के लम्बार्डी लोगों तक में दिखाई देती है जोकि वहाँ पर एक बडे प्रान्त में बसते हैं। कर्नल टॉड ने भारतीय जाटों का सम्बन्ध जो रोमन गाथों के साथ जोडा है, वह सर्वथा आकस्मिक और अकारण नहीं है। क्योंकि भाषा-विज्ञान के अनुसार गकार का परिवर्तन जकार में और जकार का परिवर्तन गकार में होता है। यथा, जन का गण तो जुट का अंग्रेजी में गुट ही बन गया है।

गोत्रों का अध्ययन करते समय हमें संस्कृत से लौकीकीकरण करते समय शब्द-साम्य का भी ध्यान रखना चाहिए। जैसेकि बसाति से ही बींसला या बैंसला और मराठों के भौंसले जैसे वंशों का की निष्पत्ति संभव है। राष्ट्रकूट से ही राठौर तो चालुक्य से ही सोलंकी जैसे कुलों का सम्बन्ध है। इसी प्रकार से प्राचीन मद्रों से ही वर्तमान के मेडों (सुनार) और मदेरना तथा मुंडेर जैसे जाट, गोत्रों का सम्बन्ध संभव है। शकों का क्षयरात वंश ही वर्तमान का सहरावत झ सौरोत, रावत और राव जैसा वंश कुलनाम हो सकता है। और तो क्या, कायस्थों का सीवास्तव भी हमें क्षयरात (शक) शब्द का ही संस्कृतिकरण प्रतीत होता है। इसी प्रकार से साड्डा (सोन्धा) होडा से हुड्डा बन गया है।

गोत्रों के नामकरण में यह समाजशास्त्रीय प्रक्रिया बहुत प्रभावशाली है। विशेषकर ब्राह्मणों के वंशों में यथा, वत्स को वात्सायन, संकृत को सांकृताययन (राहुल) अत्रि को आत्रेय, दधिचि की संतान दाधिच्य, आंगिरस परशुराम को यामदग्नेय कहना यमदग्नि ऋषि की संतान होने के कारण। लेकिन संस्कृतीकरण के लौकीकीकरण की प्रकिृया भी हमें सर्वत्र दिखाई पडती है। जैसेकि अंगिरा ऋषि की ही संतान वर्तमान में बढई(खाती) स्वयं को जंगीरा या जांगडे कहने लगे हैं। इसी प्रकार से पाणिनिकालीन भद्रक ही अब भादू जाट हैं तो मद्रक ही मदेरणा और मेड हैं तो साल्वक से साला से ही हाला जाट गोत्र बना है।

(ङ्ग) वंशों में से गोत्रों का विकास:

गोत्रों के इतिहास का अध्ययन करते समय हमें एक ओर विशेष बात का ध्यान रखना चाहिए। वह यह है कि प्राचीन वंशों से ही वर्तमान के गोत्र बने हैं। मानिये, यदि वंश किसी वृक्ष का तना है तो गोत्र उसकी शाखाएँ हैं। जैसेकि ये मूल वैदिक कालीन वंश पाँच ही थे- यदु, अनु, द्रह्यु, पुरु और तुर्वसु (जिन्हें पांचजन्य अथवा पंचकृष्टय (पाँच किसान कुल) ही वैदिक साहित्य में कहा गया है। यदु से यदि यादव वंश का प्रवर्तन हुआ है जोकि लगभग वर्तमान की सभी जातियों में विद्यमान है। वैश्यों में यदि वह वार्ष्णेय है तो राजपूतों में जादौ है, जाटों में यदुवंशी यथावत ही है। अब तो सारे अहीर या प्राचीन आभीर कबीला स्वयं को ही यदुवंश का एकमात्र प्रखर प्रतिनिधि मानता है। वैसे आभीर जाति का उत्स ईरान और इराक के मध्य में स्थित असीरिया नाम प्रान्त से ही प्रतीत होता है। भारत में भी उनका परिचय सर्वप्रथम आर्नत अथवा गुजरात के जूनागढ से लेकर अनूप (निमाड) मध्य प्रदेश तक ही मिलता है। बाद में राजपूत-काल में उनसे पराभूत होकर ही वे पूर्व दिशा में प्रवर्जित हुए हैं।

इसी प्रकार से पुरू का पंवार, पुआर जैसा वंश है जोकि बहुत व्यापक है तो तुवर्सु का तँवर वंश वर्तमान भारत में उससे भी व्यापक और विस्तृत है जोकि वर्तमान की सभी किसान और कामगार जातियों में है। इसी प्रकार से अनुओं का निवास पाकिस्तानी पंजाब के झंग-मधियाने में उशीनरों के रूप में पाणिनि की अष्टाध्यायी में आया है। मध्य काल में हमें चौहान चालुक्या या सोलंकी और परिहार तथा पंवार और गहलौत जैसे राजपूत कुलों का परिचय इतिहास में मिलता है। जिसका समय 12वीं शताब्दी से लेकर पन्द्रहवी शताब्दी तक है। इसी काल में पुरातन विदेशी वीर परन्तु बर्बर जातियों के वंशजों का आबूपर्वत पर यज्ञ रचाकर ही उनका ब्राह्मणीकरण अथवा हिन्दूकरण करके उनको राजपुत्र जैसा एक कृत्रिम और नया नाम दिया गया था। मनुस्मृति का 'वर्षलत्वं गतालोके ब्राह्मनामर्दशनात्' सूत्र इसका साक्षी है।

राजस्थानी इतिहासकार कर्नल टॉड सारी ही राजपूत जातियों अथवा उनके 36 कुलों का उद्भुव जाटों में से ही स्वीकार करते हैं। जिन जाटों ने ब्राह्मणों की पुर्नविवाह अथवा विधवा-विवाह निषेध जैसे सांस्कृतिक प्रतिमानों का पूर्णतया परिपालन किया था, वही राजपुत्र अथवा राजकुल मान लिए गये थे और जो कृषिजीवी जातियाँ जाट-गूर्जर-आभीर-मराठादि, विधवा-विवाह रचाती थी; उन्हें ही प्रकारान्तर से दासीपुत्र कहा गया था या सद्शूद्र। इसी प्रकार से सूर्य वंश और चन्द्र वंश का भी भेद काल्पनिक है। यह शक (मग) ब्राह्मणों ने किया है। वरना जाटों का मूलवंश जट्टी तक्षक नागवंश ही है। गुहिल का गहलौत भी नागवंश ही है जोकि एक विशाल वंश-वृक्ष है।

(च) व्यक्तिवाचक वंशावली:

पालों ओर खापों के संगठन गोत्रों अथवा गणों की उत्पत्ति का आधार, स्थान के साथ ही साथ व्यक्तिगत वंश-वाचक भी है। जैसाकि संस्कृत का सूत्र भी है कि 'गोत्रम् अपत्यम्' अर्थात् कम से कम तीन पीढियों तक जो वंश-परम्परा अनवरत रहती है, वही गोत्र कहलाती है। वैदिक वैयाकणों ने गोत्र शब्द की उत्पत्ति गोष्ठ शब्द से मानी है। गोष्ठ गाय के कोठे को ही कहा जाता था। जिन लोगों की गाय एक ही स्थान पर बँधती थी, उन्हीं को सगोत्र कहा गया था। लेकिन जब घर और सम्पत्ति कुल या वंश की साँझी सम्पत्ति थी तो ऐसे लोगों का आपस में रक्त-सम्बन्ध भी स्पष्ट ही है। अतएव गोत्र की निष्पत्ति का मूलाधार गोष्ठ शब्द भी उतना निरर्थक नहीं है। लेकिन गोष्ठ की बजाय यदि गात्र (शरीर या रक्त) से इस शब्द का सम्बन्ध जोडा जाए तो अधिक उपयुक्त होगा। क्योंकि गोत्रं अपत्यम् वाला धर्मशास्त्रों का सूत्र भी इसी ओर स्पष्ट संकेत करता है कि जहाँ पर तीन पीढियों का रक्त-सम्बन्ध वंशानुगत हो, वहीं पर गोत्र कहलाता है। जैसेकि कुवात्रे, केदारपोत्रों से बना है तो सिहौता जाट वंश सावित्रि पुत्रका: से ही निर्मित लगता है।

उदाहरणार्थ बिहार के लोग कुटुम्बी लोगों को ही अब तक गोतिया ही कहते हैं तो लगभग वही तीन-चार पीढियों का रक्त-सम्बन्ध सिद्ध होता है। जबकि राजपूत-जाट-गूर्जर और आभीर जैसी मध्य-किसान जातियों में गणों से बिगडकर बनने वाले वर्तमान वंश और उनसे निसृत गोत्र एक व्यापक सामाजिक संस्था है। क्योंकि वहाँ पर गोत्र केवल एक कुल या परिवार तो क्या एक गाँव तक भी सीमित नहीं है। क्योंकि एक ही गोत्र के कम-से-कम पाँच गाँव, पँचगावें से लेकर अठगावाँ, बारहा, बीसा, चौबीसी, साठा और चौरासी गाँवों तक के सशक्त संगठन हैं, जिनको ब्रज-क्षेत्र में यदि पाल कहा जाता है तो कुरु-मंडल (हरयाणा-मेरठ-मिश्नरी) में खाप कहा जा सकता है। जबकि खाप शब्द वैसे 360 गाँवों के ही संगठन को कहना उचित है। दो खापों के संगठन को 'घार' कहा जाता है। यह शब्द गूजरों और मेवों में अब भी प्रचलित है। सारी ही पाल और खापों का संगठन ही सर्वखाप कहा जा सकता है। जोकि सर्वजातीय सर्वशिरोमणि पंचायती संगठन है। इसका कार्यालय सौरभ जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) में स्थित है। इसका हजारों वर्षों का इतिहास है।

यह प्राचीन गण-परम्परा ही वर्तमान में गोत्र परम्परा है जोकि स्वयं में गणतांत्रिक अथवा पंचायती व्यवस्था ही है। जिसके माध्यम से गाँव-गोत्र का भाईचारा बना रहता है। ये खाप-पंचायतें स्वैच्छिक सामाजिक संगठन ही हैं। इनकी कोई विधि-विहित चयन-पद्धति और सदस्यता भी नहीं होती है। वर्तमान जाति-व्यवस्था के विकास से पूर्व जाति-निरपेक्ष रक्त-वंश अथवा गोत्रों का भाईचारा कायम था। वर्तमान काल में राजनीतिक महत्वाकांक्षा ने जाति-व्यवस्था को सबल ही बनाया है।

(छ) उपाधि-वाचक गोत्रावली:

उपाधि अथवा व्यवसाय विशेष भी गोत्रों के नामकरण के कारण रहे हैं। जैसेकि ब्राह्मणों में अग्निहोत्री, वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, उपाध्याय (ओझा) जैसे गोत्र उपाधिवाचक ही हैं। और तो क्या, उनमें जमींदारी प्रथा के प्रभाव से चौधरी (चर्तुधरी) चौध को धारण करने के कारण तो ठाकुर बडे जागीरदार होने के कारण बंगाल और बिहार में उपाधिवाचक गोत्र रहा है। जैसेकि रविन्द्रनाथ का ठाकुर कुलनाम था। और तो क्या वैश्य-बनियों में भी हमें चौधरी उपाधि मिलता है जैसेकि हरियाणा का नांगल चौधरी कस्बा वैश्य चौधरियों या जमींदारों द्वारा बसाया गया था।

इसी प्रकार से जाटों में भी ठाकुर और चौधरी गोत्र मिलते हैं। हाथरस से भरतपुर-आगरा तक के जमींदार जाट स्वयं को बजाय चौधरी के ठाकुर ही लिखते हैं। सेना में अधिकारी होने के कारण ही चाहर अपने पूर्वज 'राम की चाहर' के सेनानायक होने के कारण स्वयं को फौजदार ही लिखते बोलते हैं। जबकि वे महाराज मालदेव के ही वंशज है जोकि कभी भटनेर के स्वामी थे। भाटी राजपूतों के शासन से पूर्व 14वीं पन्द्रहवीं शताब्दी तक भी महाराज मालदवे का मंदिर वर्तमान में बहादुरगढ (हरयाणा) के मातनहेल (दलाल के गाँव में स्थित हो। हो सकता है कि दलाल और देशवाल जैसे गोत्रों का रक्त सम्बन्ध उनसे रहा हो। वर्तमान में चाहर लोग स्वयं को चहल भी लिखने लगे हैं।

इसी प्रकार से राणा एक उपाधि है जोकि मेवाड के राजाओं का उनके गुजराती नागर-ब्राह्मणों ने प्रदान की थी। रावल भी स्वयं उनका अपना गोत्र ही था जोकि उन्होंने गोहिल (भील) वंशज मेवाडी शासकों को दिया था। ऐसा मत अपने इतिहास-ग्रन्थ अर्ली चौहान डाईनिस्टी में डॉ० दशरथ शर्मा का है। राणा राजवंश वाचक ही है, इसीलिए वर्तमान में सारे ही राजपूत जाति के लोग इस उपाधि का सम्मानपूर्वक प्रयोग करते हैं। जबकि मूलत: यह शब्द हमें जतराना-जथराणा से जटराणा जैसे जाट गोत्र से सम्बन्धित ही प्रतीत होता है। महाभाष्यकार पातञ्जलि ने सारे ही पंजाबियों को जार्तिक अथवा जतराना या जथरिया ही लिखा है। संस्कृत का ज्ञाति वंश और महाभारत का ज्ञाति-संघ संभवत: यही है। जिसमें वृष्णि ओर अन्धकों के जनतांत्रिक नायक श्रीकृष्ण थे तो बौद्धकाल में बिहार के उसी ज्ञात या ज्ञातकुल ज्ञातक लोग स्वयं को जठर से जाठर भी कहने लगे हैं। वैसे जथरिया वर्तमान में भूमिहार (उपाधिनायक) ही हैं। क्योंकि राजपूतों से पूर्व पूर्वांचल में बड़े-बडे भूस्वामी थे। पश्चिमी उत्तरप्रदेश में कर्मकांड त्यागने के कारण वही त्यागी हैं। भूमिहार और त्यागी भी ठाकुर और चौधरी लिखते हैं। मध्यकाल सभी किसान जातियां सर्वखाप के साथ संगठित थी।

(द) उपसंहार:

पहले समग्र जातीय इतिहासलेखन की आवश्यकता थी। जिसकी शुरूआत अंग्रेजी में यदि जस्टिस कानूनगो और रामस्वरूप जून व श्री बलवीर सिंह दहिया और श्री हुकमसिंह पौडिया साहब ने की थी। तो हिन्दी में ठाकुर देशराज ने सर्वप्रथम 1934 ई० में जाटों का इतिहास लिखा था। उसके पश्चात 1960-70 ई० के आसपास ठाकरु संसार सिंह और उनके यशस्वी एवं सुयोग्य सुपुत्र योगेन्द्र पाल शास्त्री (हरद्वार) ने भी 'क्षत्रिय जातियों का उत्थान' नामक ग्रन्थ लिखकर महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। बाद में श्री दिलीप सिंह अहलावत और डॉ० नत्थन सिंह ने भी जाट-इतिहास लेखन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। उसी परम्परा में इन पंक्तियों के लेखक (धर्मचन्द्र विद्यालंकार) ने भी 1992 ई० में 'जाटों का नया इतिहास' जैसा गौरव-ग्रन्थ लिखा था तो सूरजमल शौर्य-गाथा जैसा महाकाय महाकाव्य भी रचा थां इसी श्रृंखला में श्री शास्त्री जी के अग्रज स्वर्गीय प्रताप सिंह शास्त्री जी ने भी 'जाटों का समकालीन इतिहास' लिखकर इसी परम्परा को अग्रसर किया था।

विजातीय लेखकों में परमेश शास्त्री से लेकर डॉ० उपेन्द्र नाथ शर्मा और राम पाण्डे से लेकर प्रकाश चान्दावत ने भरतपुर के ओर जाटों के इतिहास पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। अब स्वजातीय श्री रामवीर सिंह वर्मा भी अच्छा कार्य भरतपुर में रहकर कर रहे हैं। कुँवर नटवर सिंह पूर्व विदेश राज्यमंत्री ने भी महाराजा सूरजमल पर आंग्लभाषा में श्रेष्ठ पुस्तक लिखी थी। लेकिन अब बजाय समग्र जाट जातीय इतिहास लेखन के माईक्रो अथवा सूक्ष्म किवां विशिष्ट अध्ययन गोत्रों का ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीन गण-पद्धति या प्रणाली की ही प्रखर प्रतिनिधि वर्तमान की गोत्र व्यवस्था अथवा पंचायतें हैं। इस विषय में डॉ० सत्यकेतु जैसे विश्वविख्यात इतिहास वेत्ता ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला है कि प्राचीन काल में साम्राज्यवाद की स्थापना के कारण (मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक) गणों की राजनीतिक शक्ति क्षीण हो गई थी लेकिन उनकी सामाजिक संगठित शक्ति वर्तमान में भी गोत्र-खाप पंचायतों के रूप में अवशिष्ट है।'' वैसे भी सभी लोग अपने गोत्र की उत्पत्ति और प्रवास के विषय में जानने के इच्छुक हैं।

अतएव गोत्रों पर कार्य करते हुए हमें रक्त-वंश, स्थान के साथ ही साथ, वंशगत उपाधियों से उत्पन्न उत्त्पत्तियों को भी हमें नजरन्दाज नहीं करना चाहिए। यथा, गठवालों को मलिक ही क्यों कहा जाता है। चाहर स्वयं को फौजदार क्यों बताते हैं। सिनसिनवार राजवंशज होने के ही कारण अपने नाम के आगे बजाय चौधरी के ठाकुर ही क्यों लिखते हैं। इस सम्बन्ध में उस काल की सामाजिक और आर्थिक तथा राजनीतिक उठा-पटक का भी अध्ययन हमें करना चाहिए। श्री महिपाल आर्य शास्त्री जी ने प्राचीण गण-गोत्रों की उत्पत्ति पर यह पुस्तक लिखकर उल्लेखनीय कार्य किया है। उससे पूर्व ये लेख 'जाट-ज्योति' मासिक पत्रिका में भी प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक पठनीय: ज्ञान-वर्धक एवं रोचक है।

पुस्तक का नाम	:	जाट गोत्रावली
लेखक का नाम	:	महिपाल आर्य
मूल्य राशि	:	पाँच सौ रूपये
पृष्ठ संख्या	:	भाग दो- प्रथम और द्वितीय
प्रकाशक	:	सूर्य भारती, दरियागंज, नई दिल्ली-110006

Saviours of Humanity

R.N. Malik

There are three categories of people who have occupied the world stage or monopolized the space in the history books. First category consists of people who transformed the world. Second category consist of those who destroyed or crippled the humanity. Third category consist of those who saved the humanity. They are talked the least. The first category includes thinkers, preachers, philosophers, scientists and engineers. The second category includes war mongerers who made one state fight against the other leading to battles and wars. This category also includes dictators and so-called revolutionaries who killed their own people in the name of social and economic revolutions. First world war consumed 15 million young soldiers. Second world war consumed 60 million soldiers and civilians. Hitler was the chief architect of the second world war, but the seeds of the war were sown in the Versellege Treatyin 1919. Stalin was responsible for the death of 20 million people in Russia and Mao Zedong was responsible for the death of 70 million Chinese in the so called cultural revolution. The third category consists of special scientists and doctors who discovered the causes of various diseases and developed new medicines by conducting prespring research for decades. Their work will continue till eternity. This article deals with the icons who did pioneering work in this field till 1950. They were able to understand the etiology of diseases, their causative agents, transmission and finally developing the curative medicines.

Ever since its origin, humanity has been in constant war with pathogens (germs causing diseases and epidemics). Humanity has always been at the receiving end till middle of 20th century. Plague swept through Europe in 6th and 14th century. In India, plague and famine combined to kill 25% population between 1905-1910. Influenza swept through Europe and Asia soon after the first world war and took a heavy toll on the population. Anthrax killed large number of sheep and cattle of farming community every year in Europe. Now crops have started getting epidemics after 1965. This war is still continuing between the pathogens and the humans and there is no cease fire between the two. There has been a revolution in the medical research during last 7 decades and still we have not been able to overpower pathogens. We have been only able to repulse their attack. 100 % sanitation has played a big role in developed countries to ward off the attack of germs and viruses in a big way. In fact it is a very strange phenomenon that infinitesimal small germs (invisible warriors) with the size of 1000th of a millimeter are able to incapacitate or kill all powerful human beings at will.

Till 1850, even doctors did not have any clue about the causes and cures of infectious or communicable diseases liken T.B. , plague, cholera, diphtheria, syphilis, malaria, meningitis etc. They could give only some palliative medicines to reduce the pain or boost the immune system of the patients. Some patients died and some survived. In India, infant mortality was in full swing. A mother used to count her children who had crossed the age of five years.

The age of medical darkness started disappearing in middle of the 19th century when three very brilliant scientists arrived on the scene. They were Louis Pasteur (1822-1895, France), Robert Koch(1843-1910, Germany) and Joseph Lister(1827-1912, England). All the three scientists were equally brilliant and hard working. Louis Pasteur is considered the father of microbiology. He made the following discoveries.

1. He studied the fermentation process of wine, bakery and milk and revealed that (1860) the process was not chemical but biochemical. It was carried out by microbes/germs (organisms which can be seen only with the help of a microscope) who break down the sugars into intermediary products and alcohol. Souring of milk is due to the formation of lactic acid by the microbes.
2. The process of sepsis of wounds in a human body or infection in other parts of the body is also the handiwork of disease producing germs. He termed the disease producing germs as pathogens. (Non-pathogenic germs are called Saprophytes. They treat the sewage and are responsible for decomposing processes.)
3. He also developed the process of pasteurization i.e. process of destroying the germs responsible for spoiling milk and wine by heating them to 65C followed by sudden cooling. This process was a great relief to the wine and milk industries.
4. He also achieved some success in combating the diseasesof silk worms.
5. He was able to develop anti-rabies vaccine in 1885. This discovery made him the hero of France. The concept of vaccine was new i.e. injection of weakend pathogens in a human body acts as a shield against the invading germs of that order.
6. He was able to establish that specific germs produced specific diseases in specific parts of the body. For example, a TB germ will produce the disease only in the lungs or E-coli will produce infection only in urinary track. He and Koch were able to establish that the incidence of the disease in a human body, provides immunity against the same disease in the next episode.

Now it was fully established that infectious diseases were caused by disease producing germs after they entered the human body by different routes from a carrier or a patient. The next issue was to identify and isolate the specific germs causing specific diseases. This job was done by Robert Koch who made the following discoveries.

1) He studied the anthrax disease in cows and sheep and was able to isolate the germ from the blood of a dead cow and cultured it and then injected it into a bull who showed the symptoms of anthrax very soon.
2) Koch also became a hero in 1882 when he was able to identify and isolate the bacteria causing tuberculosis. Three years later, he identified the bacteria causing cholera. Earlier Dr. Snow (1854) was able to reveal that Cholera was a water-borne disease when he noticed that all the people suffering from Cholera were taking water from the same handpump in a street of London. He also discovered that some of the germs damaged the human body by releasing toxins (cholera, tetanus, anthrax, gas-gangrene). Others damaged the tissues of human body such as typhoid. Koch was also able to demonstrate that bacteria grew at a fast rate on a culture media (Agar) and formed colonies which were visible to the naked eye.
3) Inspired by the research of Koch, other scientists were able to identify and isolate the germs causing other diseases like gonorrhea, syphilis, diphtheria, dysentery, plague, whopping cough etc. He also revealed that sanitary and hygienic environment reduced the scale of

infections in hospital wards. There was lot of rivalry between Koch and Pasteur.

Joseph Lister became a surgeon in 1853 and finally joined University of Glasgow in 1859. The death rate of post-operative surgery cases was as high as 50%. Lister was able to discover that washing of wound with carbolic acid and a bandage soaked in phenol slowed down the death rate due to sepsis of wounds to 15%. Earlier in 1847, Dr. Semmelweiss of Vienna discovered that cases of puerperal fever (fever at the child birth) were brought down considerably when attendants were asked to wash their hands with soap after each delivery. The concept of preventive health care being as important as curative health care was developed thereafter.

After passing away of the famous trinity by 1912 another set of four medical scientists came on the scene to start building columns on the foundation laid by Pasteur, Koch and Lister. They were Paul Ehrlich(1854-1915, Germany), Gerhard Domagk(1895-1964, Germany), AlmrothWright(1861-1947, England) and Alexander Flemming(1881-1955, Scotland). Ehrlich got his doctorate at the age of 24 years in 1878. He wanted to produce a medicine which could kill the germs and keep the body cells unharmed. The conceptual medicine was called magic bullet.

His first great discovery was that he could identify the germs by staining their bodies with dyes. It was observed that different cells absorbed different dyes to show different colors. This propertyof germs made their classification work very easy. He also developed the complex side-chain theory showing the relationship between antigen(vaccine) and antibodies and the immune response. This theory won him the Nobel prize in 1908. In 1863 a French chemist by the name Antoine Bechamp discovered an arsenic compound named Atoxyl that could kill the protozoa causing sleeping sickness. But this compound had serious side effects on human body. Ehrlich started studying this compound to increase its firepower on the disease producing germ and reducing its side effects. The experiments were based on his side chain theory. He studied the molecular structure of the compound and removed some electrons and bombarded some more. Arsenic bonds were reduced from 5 to 3. Finally,he hit the jackpot on 31st August 1910 and produced a new compound 606 after lot of testing its efficacy on mice and rabbits. The compound was named as Salvarsan and cured people suffering from syphilis. This painful and destructive disease was widespread in Europe. The disease had become a terror.The new compound was able to completely cure the disease but had some serious side effects like nausea and vomiting. Its storage was also a problem. Injection of the medicine in human body also caused lot of problems. Two years later, Ehrlich and his co-worker Hata of Japan responded with an improved version of the compound and named it Neosalvarsan. It was a blockbuster-a miracle drug. Preparation of this drug marked a new era showing that chemical compounds can kill pathogenic germs and cure diseases.

Then comes the discovery from Gerhard Domagk (1895-1964, Germany). He was recruited in military hospital during first world war. Thereafter he came to the research side and discovered that white cells in blood are transmitters of signals to antibodies to attack the invading germs. His second revelation was that the weakendstaphi cells (bacteria causing pus and pneumonia) boosted the operation of white cells. Meanwhile another scientist Klarer had discovered that azo-dyes were weak bactericidal. Domagk integrated a sulfa drug (initially used to cure mild infections) named sulfanilamide with azo-dye. The compound was called KL-730. It was successfully tested on mice against staphi-bacterial infections. The drug was called Prontosil. It was tested on humans and animals and was found successful in many infections including meningitis, gonorrhea and pneumonia. Its most noticeable application was found on ladies having fever after child birth-a big problem in Europe. Domagk was awarded Nobel prize in 1939 but Hitler did not allow him to receive it. He got it back in 1947. Later on it was found that prontosil had some side effects particularly formation of crystals in kidneys in 12% of the patients.

Almroth Wright (1861-1947) was called Pasteur of England. He developed a vaccine against typhoid. It consisted of dead cells of typhoid bacteria. Typhoid took heavy toll on injured soldiers. He advised the British government to vaccinate the soldiers before going to Boer war in south Africa. His advice was ignoredand large number of soldiers died as a result. But this mistake was not repeated in the first world war and only 1200 soldiers out of 2 million died of typhoid. Wright thought that vaccination or immunization was a better bet than developing anti-bacterial drugs. But vaccination is only an advance measure. If somebody is already infected with some disease then anti-bacterial medicine is the only answer as every citizen cannot be vaccinated. Emil Behring of Germany (born in 1854) revealed in 1890 that even toxins or serum produced by toxin producing germs if injected in a human body in sub-lethal dose could also provide a safety belt against the disease caused by invading toxin producing germs of the same order.

Alexander Flemming (1881-1955) was a Scottish physician. A team of doctors informed him that airtight antiseptic bandages increased infection in case of deep wounds. Flemming answered this problem by revealing that some bacterial groups thrived in the absence of oxygen and called them anaerobic(gonorrhea, tetanus and gas gangrene) and 90% soldiers were infected with anaerobic infections. Flemming's greatest discovery came in 1922. He was able to see that some molds (fungus) produced some material that killed bacterial colonies on the spot. He called this material as lysozyme. It was discovered that lysozyme damaged the cell walls of bacteria and inhibited their growth but it was effective against only few categories of bacteria. Five years later in September 1928, he found that another specie of fungus released a similar enzyme which killed staphie bacteria. The fungus was called Penicillium notatum and the product produced was called Penicillin in March 1929(He got Nobel Prize in 1945). This wonderful discovery had two observations. Firstly, Penicillin damaged the cell walls of staphie bacteria and prevented their multiplication. Cells of human body did not have this mechanism and hence Penicillin had no side effect on them. Its only limitation was that it did not kill the gram-negative bacteria like that of typhoid.

Now the question was to find out the molecular structure of Penicillin, its stabilization, concentration of the broth and its production on a larger scale. Flemming stopped further research on Penicillin as he miserably failed to stabilize the broth.

Sir William Dunn, a Scottish merchant banker and a great philanthropist set up a school of pathology at Oxford in 1927. Its director George Dreyer (a brilliant pathologist) was able to form a team of very brilliant chemists to conduct research in hisschool. It consisted of a trinity of Howard Floreya Britisher cumAustralian), Ernst Chain (a Jew from Germany) and Norman Hertley(England). Hertley did Phd in chemistry at the age of 25 years. This team of brilliant scientists started working on Penicillin from the point where Flemming left after initial

discovery. Chain initially worked on lysozyme and found that it was a weak anti-bacterial compound. With great difficulty and ingenuity, Hertley was able to develop 80 mg of broth and gave it to Chain. Chain injected staphie bacteria into a group of mice and then injected the penicillin extract in half of them. All the uninjected mice died and all the other survived. The cat was out of the bag. Penicillin was stabilized, purified, quantified and proved to be bactericidal for staphie bacteria which were responsible for causing many types of infections in a human body. Earlier Chain had discovered that Penicillin was 50 times more potential then sulfa drugs i.e. Prontosil developed by Domagk. This feat was achieved on 26th May 1940. Penicillin saved the lives of large number of wounded soldiers till the end of second world war on June 6th, 1944.

Florey (now Director of Dunn School) proceeded to US to prompt pharmaceutical companies and research laboratories to produce more Penicillin In September 1940.This promotion was not possible in war stressed England with constant bombing raids by German aeroplanes.

The next problem was the study of molecular structure of Penicillin compound.So Florey brought another brilliant chemist Edward Abraham to work with Chain. The idea of searching another category of mold which could produce larger quantity of brothwas also started. Chain and Abraham were able to purify the broth to 80%. They injected the 80% pure extract in the body of a constable having large number of blisters on his body and was fully recovered. The extract was again tested on a boy who was having equally serious problem of infection after the hip surgery. He too was cured. Florey and Hertelyaddressed large number of meetings with pharmaceutical and research laboratories in US. After the attack on Pearl Harbor on 7-12-1941 manufacturing of Penicillin became a national priority both in England and US. And as a result 17 renowned pharmaceutical companies like Merc and Pfizer in US and two companies in England got engaged in manufacturing of Penicillin. This resulted in producing sufficient quantity of Penicillin to be used for the treatment of lacs of injured soldiers during the war to save their lives.

Meanwhile Chain and Abraham became busy in studying the molecular structure of penicillin. They discovered that Penicillin molecule contained an element of Sulphur along with organic elements of hydrogen, nitrogen, oxygen and carbon. But they could not understand the ring structure of penicillin molecules. This problem was solved by Madam Dorothy Hodgin(1916-1994) the only British lady to get Nobel prize in science. She was able to depict the complete molecular structure of Penicillin molecule with the help of her crystallography technique. Thus, ended the complete project of Penicillin by 1945. The penicillin project had created an entirely new and profitable antibiotic industry. Companies like Glaxo, CIBA-Geigy, Merc and Co, Pfizer had played a big role in making heavy investment of Penicillin manufacturing.

Things did not stop here. The pathologists and microbiologists started investigating new microbes to yield new and more potent antibiotics. In other words antibiotic revolution started from England and US from 1945 onwards. Alexander Flemming, Florey and Ernst Chain jointly received Nobel prize in medicine in 1945. Hertley and Abraham did not get any recognition, but they got plum posts in renowned pharmaceutical companies of USA.

Cure for Tuberculosis :- Till 1945, 75000 people used to die prematurely every year in US because of Tuberculosis. It was a very painful and consuming lung disease. Some sulfa drugs or even penicillin could cure only the patients in the initial stages. Sanatoriums only lessened the sufferings of the patients. Cure for the disease was discovered by two intrepid scientists namely Albert Schatz (1920-2005) and Selman Waksman (1888-1972).Both were from US and soil scientists. Penicillin did not damage gram-negative bacteria i.e. T. pallidum (syphilis), M. leprae (leprosy) and M. tuberculum (T.B.). M. tuberculum, the bacteria causing TB had been discovered long back in 1882 by Thomas Koch. But the disease remain untreatable till 1945.

French microbiologists R.Dubos made a valiant effort to develop two germicidal compounds from soil dwelling bacteria in 1939. But the effect of these two products was only skin deep but this discovery created a passion for Schatz and Waksman(Rutgers University, New Jersey) to search out something from the soil. Actinomycetes (soil bacteria) resembled penicillin mold and was killer of other species of bacteria. So, the duo collected 1 lacsoil samples from different parts of US and were finally able to identify some 1000 species which showed some promise of releasing germicidal properties. It was like searching a needle in the haystack. Finally, after 30 months of agonizing hard work, Schatz was able to identify two actinomycetes (on 1910-1943) which produced a germicidal substance. The substance was named as streptomycin. Initial experiments showed that it killed the T.B. germs. Next big problem was to produce the substance in sufficient quantity, its purification and successful testing first on mice and then on human beings. There was another team of very renowned veterinary pathologists by the names of Feldman and Hinshaw. They were also working on bovine transmitted diseases and T.B. was believed to be falling in this category. They offered their services to Schatz and Waksman to assist in research. Schatz was able to give 10 gms of distilled streptomycin to the Mayo team who tested its efficiency on mice and the results were very startling. The medicine was not only able to cure T.B. but also plague, tularemia and intestine diseases called shigellosis. Now the problem was to get the extract in sufficient quantity to test on human bodies with wide range of experiments. Again, Merc and Co came to the help of Waksman and offered to invest heavily in the project ($3.5 million in 1944). Other companies developed cold feet on the ground that engagement with penicillin was more important to meet the need of treating wounded soldiers where streptomycin will not do. So, in July 1944 the new product was retested in 25 infected guinea pigs. Out of 25 only 2 pigs died and 23 survived. But autopsy of all 25 mice indicated that the bacteria still existed. It showed that the new product was not bacteria killer but stopper of their multiplication.

After the discovery, Waksman became a national hero. Time magazine showed him on the cover and called "Man of the Soil". But Waksman marginalized other co-workers of the project particularly Schatz, Feldman, Hinshaw, Tilser and 50 other researchers. Schatz filed a suit against Waksman for not sharing the royalty which he won out of court settlement. He also wrote to Nobel Prize committee for sharing his contribution in the project. Later Waksmandeveloped another derivative i.e. Neomycin. He got the Nobel prize in 1952. Patrica Thomas was the first T.B. patient who received treatment of streptomycin injections and got completely cured in summer 1945.

The success of Waksman encouraged other microbiologists to search more bacteria from the soil who could produce substance to treat other diseases. One such team was of B.M. Dungar(73 years old and a renowned plant pathologist) and Dr. Subarao, head research at Lederle Laboratories. Dr. Subarao had a very long list of discoveries to his credit including that of Vitamin-B 12 and ATP. After struggling for 3 years the team stumbled across a yellow actinomycete - cousin of S.

Griseus that produced streptomycin. Duggernamed it Streptomycesaureofaciens- the gold maker and called the product as Aureomycin. It was broad spectrum product and killed both gram positive and gram-negative pathogens including E-coli that causes urinary infections and some viruses as well. The product looked like a true magic - bullet, a drug that would cure nearly everything. The new product was patented in 13-9-1949.

Like Lederle, famous US company Pfizer started a project of discovering soil bacteria which could produce another Aureomycin like product. The company collected 135000 soil samples and finally hit the nail on the head in 1945. The yellow actinomycete bacteria identified was named as Streptomyces rimosus and product was named as Terramycine (coming from Terra-the earth).

Like Aureomycin, it was effective against both gram positive and negative bacteria and also against some fungal and viral infections. Pfizer was manufacturing and selling penicillin and streptomycin but not making significant profits. He saw this potential in Terramycine. But Aureomycin was selling like hot cakes and begged 26% of the market sales. Therefore, Pfizer decided to decode the molecular structure of Terramycinefirst. So, he engaged the most renowned chemist of US by the name of Robert Woodward (1917-1979). Woodward had done his PhD in Chemistry at the age of 20. He would figure out the molecular structure even by his thought process alone. Woodward immediately told that molecular structure of Aureomycin and Terramycine were almost the same except former had one extra chlorine atom and later the oxygen. Functionally also theywere more or lessthe same. The fierce competition between Pfizer and Lederle continued for a long time for the sale of their products.

After the discovery of streptomycin, aureomycin and terramycine every pharmaceutical company on the planet went for the treatment hunt and started collecting soil samples of exotic locations to find out the next wonder drug. Eli Lilly was a very old drug company.This company also came in the race to find a new antibiotic drug via testing of soil samples. Its physician by the name of A.Aguilar (from Philippines) discovered another germ producing another antibiotic. This product was named Erythromycin. Like penicillin it also attacked the staphie group but via different route. It did not corrode the cell wall of the bacteria but prevented the formation of critical proteins from their growth. It was a powerful antibiotic but did not have broad spectrum. Parke-Davis America's largest drug manufacturer also started the project for discovering more potent antibiotic from compost or farm manure. Its scientist Burkholder analyzed 7000 samples and was finally able to isolate a new bacteria in march 1946. The molecule contained nitrobenzene. The molecule was very simple in structure and could be synthesized at a lesser cost. The final product was known as chloromycetin. It was effective against both gram positive and negative bacteria. It was found most effective against the prevalent disease of Typhus caused by the bite of lice. More soldiers of Napoleon army were killed by Typhus than by Russian bullets.

This is the story of exactly 100yrs of pioneering work of many scientists and their co-workers who worked day and night to understand the causes of various infectious diseases (most of them were fatal and taking the form of epidemics) and developed the relevant medicines. Special credit goes to these scientists because they were studying the growth and behavior of invisible single celled germs. Consequently,treatment of all major infectious disease was available by 1950. Work on studying virology started almost on similar lines. By then,large number of research institutes on medical science had been setup and large teams of doctors and medical scientists were busy on further research work. But the problem study of virology wasall the more difficult because virus could be seen only by an electronic microscope and it grew not on Agar (like germs) but only inside the cells of human body. Antibiotics did not work on it as it was not a living agent. Accordingly, vaccination was the only therapy available to prevent viral infections. Hence these pioneers or icons like Pasture, Koch, Lister et. all had done a commendable work in saving our lives and give safety belts against the invading germs into human body. Their humanitarian work will continue till eternity. As a result they also need to be worshipped like the pantheon of our gods.

India's Miracle - DESI GHEE

Himanshi,
Certified Nutritionist

Desi Ghee forms an integral part of most Indian Diets. One would agree that addinga portion of Ghee on Chapattis,Dals and Rice makes them taste wonderful. Moreover, our ancestors swore by this nutritional delight and used it in most of the 'Gharelu Nuskhas'.It's one of India's heritage recipes and a therapeutic one at that. The method using which Gheeis made; gives it a unique flavour, aroma and taste, along with numerous health benefits. So from giving good looks to sharp brains, from overcoming constipation to spiritual evolution, Gheeis celebrated in India for every reason small and big. In present time, Ghee is one of the most misunderstood foods in India. It was once considered the food of Lords and is now a "fattening" ingredient and is held responsible for lifestyle disorder of this era. But, Is this true?

Let's Find Out.

Improving Heart Health

Although most humanity associates butter with fat and a detriment to greathearthealth, the rich variety of fats in ghee provide a healthy boost to the heart that is receptive to it. Omega-3 fatty acids can help decrease your levels of unhealthy cholesterol and provide an energetic balance to your fat intake.Rich in antioxidants, conjugated linoleic acid (CLA) and fat soluble vitamins like A, E, D. Ghee has just what you need for a healthy heart.

Ghee Helps Fight Illnesses

Ghee contains both anti-bacterial and anti-fungal properties making it a great way to boost your immune system and also protects us from infection, especially in the digestive tract. It also helps heal minor illnesses like stomach upset or cold and flu.

Ghee is Easily Digestible

Ghee is very easy to digest. Because ghee is free of casein and other milk solids, it is a great option for people with sensitivities to dairy. Ghee contains Butyrate which helps in supporting healthy digestive tract and decreases inflammation.

Ghee has Amazing Taste

Traditionally we add Ghee in each meal. The quantity at which the taste of food is best is the right quantity. Only your tongue and stomach can tell you that. Ghee improves your satiety signal and ensures you eat the right amount of food.

Ghee helps with Hormone Balance

We must consume sources of cholesterol-rich saturated fats like ghee to provide the building blocks for sex hormones, including testosterone, oestrogen and progesterone. The cholesterol, vitamin A and vitamin K2 found in ghee also plays an important role in hormone synthesis and toxin detox.

Ghee Reduces Cholesterol

Ghee reduces cholesterol by increasing contribution of lipids towards metabolism. Liver produces excess cholesterol under stress. Ghee helps you de-stress, sleep better and wake up fresher. Ghee is excellent for joint health as it lubricates and oxygenates them.

Ghee Improves Skin

Ghee is considered to be a natural nourishing ingredient which can help you in getting a soft and supple skin. The anti-oxidants in Ghee make it the miraculous anti-wrinkling and anti-ageing therapy you were searching for.

So, there we have it. While Ghee is celebrated as one of the healthiest ingredients in the Indian kitchens and mostly enjoyed during winters, its edibility during summers is generally questioned. If you think ghee can only be enjoyed during winters, then you might be wrong. Gheeis loaded with healthy fats, and a human body needs some amount of fats to keep it going. This is why we recommend having Ghee during hot days in moderate amount. Also, since our body gets dry in summer, consumption of Ghee will help balance the internal moisture.To get the best results, Ghee should be added separately after cooking as foods cooked in Ghee may have completely different effects.

So, cherish this delicacy and add Desi Ghee to your food & Stop worrying about the Ghee Fats.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 19.08.88) 5'6/5" MA (Ssociology), B.Ed. Working as regular teacher in a reputed school at Panchkula. Father worked as Sub Divisional Engineer, HUDA. Avoid Gotras: Beniwal, Dabas, Sehrawat. Cont.: 9876060046, 09815879978
- SM4 Jat Girl (DOB 02.01.82) 36/5'2" B.A. Lives in Mohail and doing her own work. Avoid Gotras: Sangwan, Punia, Sheoran. Cont.: 9888466688
- SM4 Jat Girl 26/5'5" MBA from Punjab University. Working in MNC Chandigarh. Avoid Gotras: Kaliraman, Hooda, Dhull. Cont.: 9417628803
- SM4 Jat Girl (DOB October, 1989) 5'3" M.A. B.Ed. Employed as Teacher in a reputed private school. Avoid Gotras: Khatri, Sehrawat. Cont.: 9463189771
- SM4 Jat Girl (DOB 26.3.90) 28/5'4" B.Tech in Electrical Communication. P.G. Diploma in Fashion Designing. Father bank Manager. Avoid Gotras: Mahal, Bains. Cont.: 9416145475
- SM4 Jat Girl (DOB 12.08.92) 26/5' B.Tech in Electrical Communication. Father bank Manager. Avoid Gotras: Mahal, Bains. Cont.: 9416145475
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.87) 31/5'3" B.Sc. Hons, MSc. Hons, PhD. Working as Assistant Professor Physics on regular basis. Avoid Gotras: Malik, Kaliraman, Dahiya. Cont.: 9988336791
- SM4 Jat Girl (DOB 04.01.92) 26/5'4" MSc. Physics, B.Ed Working as teacher. Avoid Gotras: Malik, Redhu. Cont.: 9888396275, 08360227580
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95) 23.5/5'2" MSc. (Maths) final semester result awaited. Avoid Gotras: Beniwal, Dhill, Nehra, Godara. Preferred Govt. officer, Lecturer/Teacher from Chandigarh & Panchkula. May be from Karnal and Kurukshetra. Cont.: 9466442048
- SM4Jat Girl (DOB 1988) 30/5'2" M.A. Economics (Hons.) Pursuing PhD, last year. NET cleared. Father class-II officer (Rtd.) from Haryana govt. Brother settled in USA. Tricity preferred. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Rana. Cont.: 9988224040
- SM4 Jat Girl 28/5'2" M.C.A., from Bansthal Vidyapeeth. . Working as Assistant Manager in Axis Bank. Avoid Gotras: Chahal, Solath, Jattan. Cont.: 9810062752,9718853333
- SM4 Jat Girl (DOB 12.10.92) 25.7/5'2" MBBS Doctor in Civil Hospital Gharounda, Karnal. Avoid Gotras: Jhorar, Godara, Kularia. Cont.: 9416860195,9996776711
- SM4 Jat Girl (DOB 12.12.90) 27.5/5'4" B. Tech from P.U.M. Tech from D.T.U. Serving in Infosys Company. Avoid Gotras: Jatain, Malik, Nandal. Cont.: 9417371824
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.91) 27.7/5'3" B.Tech. in Electrical & communications from M.D.U. Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Pawaria, Ahlawat. Cont.: 9811658557
- SM4 Jat Girl (DOB 31.05.87) 31/5'6" Employed as JBT Teacher in Punjab Govt. at Mohali. Preferred Govt. employee from Tri-city Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dabas, Dhankar. Cont.: 9646963113
- SM4 Jat Girl (DOB 13.04.94) 23/5'2" B.Com, M.Com. Father in HARCO Bank Chandigarh. Avoid Gotras: Dudi, Beniwal, Bhadu, Prohibited Nain. Cont.: 9417839579
- SM4 Jat Girl (DOB 26.04.89) 28.11/5'3" M.Sc (Hons.) Chemistry PU., B.Ed, Doing Ph.D in Chemistry last year from IIT Ropar. CTET, HTET & GATE clear. Senior Research Fellow. Father retired from HMT. Avoid Gotras: Nehra, Sangwan, Mandhan. Cont.: 9355783100
- SM4 Jat Girl (DOB18.08.88) 29.6/5'4" M.Sc Math. Pursuing M.Ed. Employed as PGT Teacher-Math in New Indian School, Pinjore. Running Coaching Institute. Father retired from HMT. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 25.10/5'5" B.A. LLB, (Hons) LLM, Persuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowery seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula Own Flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal. Contract:9467671451
- SM4 Jat Girl (DOB March 89) 29/5'4" MCA from Punjab University Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Sangwan, Punia. Cont.: 9988359360
- SM4 Jat Boy 27/5'10" B.Tech (Electrical & Communications) Employed as Coordinator in Skill Development & Industrial Training, Haryana on contract basis. Own house at Ladwa (Kurushetra) and agriculture land at village. Father retired as Manager from Haryana State Warehousing Corporation. Avoid Gotras: Mandhan, Sangwan. Cont.: 9050571621
- SM4 Jat Boy 25/6' B.Com, Doing M. com Employed in Central Post Office at Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Preferred match in Govt. job. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 9779721521
- SM4Jat Boy(DOB 20.10.89)29.4/5'11" MA, Administration. Employed as Junior Officer in Health Department. Current job in Gammon Company, Agriculture. Avoid Gotras: Dalal, Kadian, Dahiya. Cont.: 9812672996
- SM4Jat Boy (DOB 22.03.91)27/5'7" B.Com. Diploma in Computer. Employed in ICICI Bank Tricity. Father Under Secretary in Law Department Haryana. Avoid Gotras: Kodan, Kundu, Gulia. Cont.: 82840014050
- SM4 Jat Boy (DOB 04.11.91)26.3/5'10" B.Sc. Private Job in Hospitality Management Executive. Father was Ex-serviceman. Avoid Gotras: Khakar, Gill, Mor. Cont.: 9888200992
- SM4 Jat Boy (DOB 05.09.90)27.6/5'11" MBA Hotel Management four year from KUK. Father Inspector in Haryana Police. Avoid Gotras: Kadyan, Kalkal, Dahiya. Cont.: 9812483010,99992237049
- SM4 Jat Girl 27/5' B.Com Doing private job. Avoid Gotras Deswal, Srikanda. Cont.: 09815946497
- SM4 Jat boy 26.5/6' MBA Doing private business. Monthly income about Rs. 2 lakh. Avoid Gotras: Malik, Dalal Cont.: 09855588696
- SM4 Jat boy (DOB 27.11.1991) 28.6/5'11" B.Com, C.A, LLB. Avoid Gotras Milk, Sharan, Dhul. Cont.: 9872415151
- SM4 Jat Girl (DOB 30.09.1990) 29/5'4" B.Tech, M.Tech doing Phd (Computer Science). Avoid Gotras Milk, Sharan, Dhul, Cont.: 9872415151

विजयपुर (जम्मू) में सर छोटूराम जी की 137वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई

दिनांक 25 मार्च 2018 को सर छोटूराम जी की 137वीं जयंती सर छोटूराम भवन (निर्माणाधीन) विजयपुर (जम्मू) में धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक (Former DGP, Haryana), विशिष्ट अतिथि श्री रविन्द्र कुमार, डिप्टी कमिश्नर उधमपुर सहित श्री राहुल मलिक, SSP जम्मू, श्री रहीम दाद (Ex MLC)

मौजूद थे। उनके अलावा राजवीर सिंह कुशवाहा, रामनारायण चौधरी, नागौर, प्रियव्रत छिकारा, टटेसर, दिल्ली, रोहतास सिंह चहल, करनाल आदि गणमान्य महानुभावों ने भी भाग लिया।

इस समारोह की प्रमुख विशेषता यह रही कि इसमें जट्ट सिक्ख व जाट मुसलमानों की भागीदारी सराहनीय रही। समारोह के आयोजक कमल सिंह ने अपने संबोधन में बताया कि बॉर्डर पर अक्सर होती रहती फायरिंग से अपने बिरादरी के लोगों के जान-माल का नुकसान होने पर चिंता जताई। निर्माणधीन सर छोटूराम जाट भवन को पूरा करने के लिए उन्होंने धन संग्रह की अपील भी की थी। बता दें जम्मू जाट भवन निमार्ण हेतु चंडीगढ़ जाट सभा के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने अहम भूमिका निभाई है।

पेंशन सिस्टम में रोबिन मलिक ने की पीएचडी

पंचकूला। सेक्टर–8 निवासी रोबिन मलिक हरियाणा में पेंशन सिस्टम में डिग्री करके डाक्टर बने हैं। यह देश व प्रदेश में पेंशन सिस्टम पर पहली पीएचडी डिग्री है। आज तक देश में किसी ने भी पेंशन सिस्टम पर पीएचडी नहीं की है। हरियाणा में दो लाख से भी अधिक पेंशन धारक है, आंकड़ा दो करोड़ से ऊपर हैं, उन्होंने पीटीयू जालंधर से हरियाणा के सरकारी पेंशन सिस्टम से पीएचडी की है। इससें पहले देश में किसी भी छात्र ने पेंशन सिस्टम पर पीएचडी नहीं की है। पेंशन सिस्टम पीएचडी सामाजिक सुरक्षा के लिए एक रोल मॉडल है। जो सभी प्रदेश व केन्द्र सरकार के लिए उपयोगी सिद्व होगा। रोबिन मलिक के पिता डाक्टर उमेद सिंह मलिक हरियाणा वित्त विभाग से डायरेक्टर के पद से रिटायर्ड अधिकारी हैं। उमेद मलिक ने भी ट्रेजरी हरियाणा में पीएचडी की डिग्री हासिल की है। जाट सभा चण्डीगढ़ रोबिन मलिक को इस उपलब्धि पर आर्दिक बधाई देती हैं एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

पूर्वांचल जाट समाज गुवाहटी का 13वां राष्ट्रीय महाधिवेशन

दिनांक 16 मई को गुवाहटी के गड़चुक स्थित जाट भवन में 13वां महाधिवेशन का शुभारंभ नवनिर्मित जाट भवन के प्रथम तल्ल का उद्घाटन राजस्थान की सीकर लोकसभा सीट से सांसद स्वामी श्री सुमेधानंद सरस्वती के कर-कमलों द्वारा हुआ। महाधिवेशन का शुभारंभ स्वामी श्री सुमेधानंद सरस्वती द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

स्वामी सुमेधानंद सरस्वती द्वारा दीप जलाकर समारोह का शुभारंभ

चंडीगढ़ जाट महासभा के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक द्वारा संबोधन

सभा का शुभारंभ पूर्वांचल जाट समाज के अध्यक्ष बुधराम चौधरी द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। महाधिवेशन में मेघालय असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर आदि विभिन्न राज्यों के काफी संख्या में जाट प्रतिनिधियों ने शिरकत की। सभा को संबोधित करते हुए विभिन्न वक्ताओं ने जाट समाज के इतिहास से लेकर शिक्षा, खेल, व्यवसाय, कृषि आदि विभिन्न क्षेत्रों में समाज के योगदान की चर्चा की।

प्रबुद्धजन 'जाट जागृति' पत्रिका का विमोचन करते हुए

सभा को संबोधित करने वालों में सांसद सुमेधानंद सरस्वती, पूर्व सांसद रामसिंह कस्वा, युआईटी सीकर के चेयरमैन हरिराम रिणवा, हरियाणा के पूर्व डीजीपी डॉ.एम.एस.मलिक, पूर्व सीकर जिला प्रमुख डॉ. रीता चौधरी, संयुक्त संसदीय समिति सचिव श्रीमती अंजु राठी राणा आदि वक्ताओं ने सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर पूर्वांचल जाट समाज द्वारा प्रकाशित **'जाट जागृति'** नामक पत्रिका का स्वामी सुमेधानंद सरस्वती ने विमोचन किया। सभा का संचालन श्रीचंद ढाका द्वारा किया गया।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री के.पी. सिंह
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।